श्री सुदर्शन संदेश

रु. 15/–

अगस्त 2022

वर्षः 19 अंकः 9

7

8

9

10

11

12

13

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

भगवान के नाम का अवलम्बन लेने वाले के जीवन में कुछ भी अचानक नहीं होता है, जो कुछ भी होता है वह भगवान की कृपा से ही होता है। ऐसे भक्त के भाव भगवान के प्रति अन्यान्य रूपों में हो सकते हैं। वह भगवान को मित्र, पिता, पति, पुत्र, प्रेमी किसी भी रूप में स्वीकार कर सकता है। गुरू रूप में भी स्वीकार कर सकता है। भगवान श्रीराम ने शबरी के माध्यम से हमें नवधा भक्ति के बारे में बताया है कि किस प्रकार हम भगवान की कृपाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

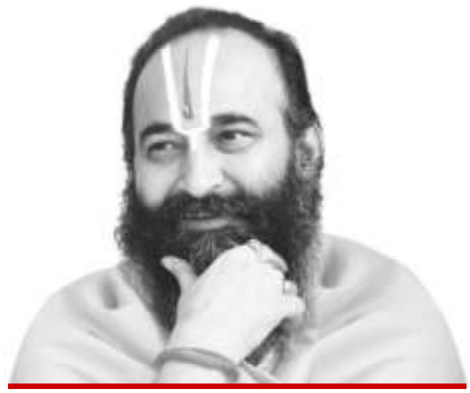

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

अधिपति– श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरु अमृत है जगत में, बाकी सब विषबेल,
सतगुरु संत अनंत हैं, प्रभु से कर दें मेल।

वर्ष: 19, अंक: 9 हिन्दी मासिक

अगस्त 2022

संरक्षक :
अनन्त श्री विभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

सलाहकार: डी. सी. तँवर

प्रकाशक : जनहित मानव कल्याण केन्द्र

पत्राचार : श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम,
श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल–सूरजकुण्ड मार्ग,
फरीदाबाद–121003 (हरियाणा)

दूरभाष : 9910907109

E-mail : shrisidhdataashram.org@gmail.com
website : www.shrisidhdataashram.org

वैधानिक : न्यायक्षेत्र दिल्ली ही होगा।

स्वत्वाधिकारी जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–95, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित एवं ई–9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित।

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर' (9911161753)

कृपया श्री सुदर्शन संदेश में प्रकाशन के लिए अपनी शिकायतें, सुझाव, लेख, संस्मरण या अनुभव पत्राचार के पते यानि श्री सिद्धदाता आश्रम को भेजें। आप इन्हें आश्रम की ईमेल पर भी भेज सकते हैं।

अनुक्रमणिका

1. श्रीगुरुगीता : गुरु के किए सब संभव है, इसमें कोई संशय नहीं
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 5
2. संपादकीय : लकीर के फकीर मत बनिये
शकुन रघुवंशी श्रीधर 06
3. कलियुग जैसा युग नहीं आएगा
श्री वैकुंठवासी गुरु महाराज जी ...8
4. गुरु पूर्णिमा और गुरुतत्व
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 12
5. रामभक्त मोरोपंत की कहानी 33
6. सुखद अनुभवों की लंबी श्रृंखला श्री गुरु महाराज 36
7. संस्कार : कर्णवेध संस्कार 38
8. जीवन सिखाने कृष्ण रूप में आए 39
9. गुरु परम्परा का प्रभाव 41
10. श्री रामानुज जन्म 42

छायाचित्र

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) के अधिपति परमपूज्य श्रीगुरुमहाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में संचालित श्री नारायण गौशाला में गौवंश।

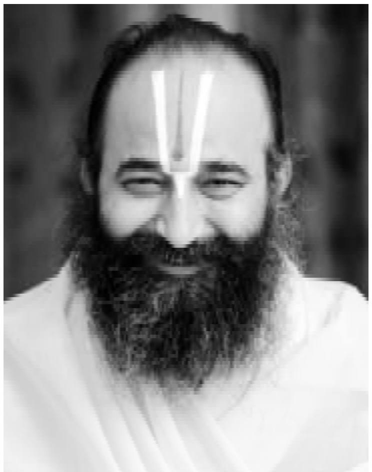

गुरू के किए सब संभव है, इसमें कोई संशय नहीं

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति–श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरूरेको जगत्सर्वं ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम्। गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरूम्।।211।।
ज्ञानं विना मुक्तिपदं लभ्यते गुरूभक्तितः। गुरोः समानतो नान्यत् साधनं गुरूमार्गिणाम्।।212।।
गुरोः कृपाप्रसादेन ब्रह्माविष्णुशिवादयः। सामर्थ्यमभजन् सर्वे सृष्टिस्थित्यंतकर्मणि।।213।।
मन्त्रराजमिदं देवि गुरूरित्यक्षरद्वयम्। स्मृतिवेदपुराणानां सारमेव न संशयः।।214।।

अर्थात् *ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित समग्र जगत् गुरूदेव में समाविष्ट है। गुरूदेव से अधिक और कुछ भी नहीं है। इसलिए गुरूदेव की पूजा करनी चाहिए। गुरू के प्रति अनन्य भक्ति से ज्ञान के बिना भी मोक्ष पद मिलता है। गुरू के मार्ग पर चलने वालों के लिए गुरूदेव के समान अन्य कोई साधना नहीं है। भाव से गुरू के कृपा प्रसाद से ही ब्रह्मा, विष्णु और शिव यथाक्रम जगत की सृष्टि, स्थिति और लय करने का सामर्थ्य प्राप्त करते हैं। यह दो अक्षरों वाला गुरू मंत्र सभी मंत्रों में राजा है, श्रेष्ठ है, स्मृतियां, वेद और पुराणों का सार ही है, इसमें संशय नहीं है।*

व्याख्या : *भगवान शिव बता रहे हैं कि गुरू के किए सब संभव है। गुरू जो चाहे वो कर सकते हैं। गुरू वास्तव में भगवान की शक्ति और धर्म के ज्ञान से परिपूर्ण महापुरूष हैं जिनके किए सब संभव है। इसमें कहीं भी कोई संशय नहीं है।*

गीली मिट्टी अनगढ़ी, हमको गुरुवर जान,
ज्ञान प्रकाशित कीजिए, आप समर्थ बलवान।

लकीर के फकीर मत बनिये

शकुन रघुवंशी श्रीधर

आप देखेंगे कि कुछ लोग बड़े लकीर के फकीर होते हैं। उन्होंने जो सुन लिया, वही मान लिया और उसके अलावा कुछ भी मानना जैसे उन्हें नागवार गुजरता है। ऐसे लोगों से जरा बचकर रहिए। थोड़ी दूरी बनाकर रखेंगे तो अच्छा रहेगा।

वास्तव में यह लकीर के फकीर किसी भी प्रकार की तरक्की से दूर रहते हैं और उन्हें उतना ही प्राप्त होता है जितना कि उन्हें तकदीर से प्राप्त हो जाता है। ऐसे लोग अपनी बनी-बनाई लाइनों पर अड़े रहते हैं और किसी भी हालत में सुधार करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

ऐसे लोगों में भी दो श्रेणियां देखने में आती हैं। एक वो लोग जिन्हें तकदीर उम्मीद से ज्यादा दे देती है वो इतराता फिरता है। उसे अपनी ढाक के तीन पात वाली सोच ही बेस्ट लगती है। वह सोचता है कि उसके पास दूसरों पर अधिकार करने का अवसर प्राप्त है। इसी कड़ी में वह दूसरों के साथ लगभग बदतमीजी तक कर बैठता है। दूसरे वो लोग हैं जिन्हें उम्मीद से कम किस्मत देती है। ऐसे लोग हमेशा दूसरों को दोष देते नजर आते हैं। उन्हें कभी नजर ही नहीं आता है कि उनके ज्ञान में, सोच में, विचार में कमी है। वह कभी सोचते ही नहीं हैं कि उन्हें जो भी प्राप्त हो रहा है, वह उनके स्वयं के कारण है।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि आखिर क्या करें कि जीवन में न तो कठोरता का रुख करना पड़े और न ही हमें कोई मलाई समझकर चट कर जाए।

बहुत साधारण तरीका है। इन सबसे बचने का। आपको करना केवल इतना है कि स्वीकार करना है।

यह सबसे बड़ी योग्यता है। जब एक व्यक्ति स्वयं को स्वीकार कर लेता है तो उसके द्वारा भगवान को प्राप्त करने की संभावना भी बढ़ जाती है।

उसके प्रश्न नष्ट होने लगते हैं कि क्या कब कैसे हो रहा है, कौन कर रहा है। कृष्ण बताए जा रहे हैं, अर्जुन सुन रहे हैं। लेकिन स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। जैसे ही वह कृष्ण को गुरु स्वीकार करते हैं, वैसे ही उन्हें सब समझ आने लगता है – नष्टो मोह स्मृतिलर्ब्धा। मेरा मोह नष्ट हो गया है और मुझे याद आ गई है। तो कृष्ण भी कह देते हैं–कृतनिश्चय युद्ध च।

तो फिर युद्ध कर न। अर्थात् कर्म कर।

जिसे करने के लिए आया है।

लेकिन इतना ध्यान रहे कि कर्म करने से पहले योजना बनानी है। मजबूत योजना बनानी है जिसमें सफलता का प्रतिशत अधिक नजर आता हो। ऐसी योजना बनाओ कि पहले से आपमें वो आत्मविश्वास हो कि हां इसे इस प्रकार विजयी करूंगा। इसके बाद योजना को क्रियान्वित करने का नंबर आता है। इसके बाद योजना को क्रियान्वित करने के लिए साधनों की आवश्यकता होती है। साधनों को जुटाने के प्रयास करने चाहिए। इसके लिए हर संभव कोशिश करके भी साधनों को जुटाना ही चाहिए। क्योंकि बिना हथियार के जंग नहीं जीती जा सकती है।

योजना हो गई, साधन जुट गए। इसके बाद कर्म में रत हो जाओ। लेकिन बस इतना ध्यान रहे कि लकीर के फकीर मत हो जाना।

आपने योजना बनाई। उसके हिसाब से काम करना प्रारंभ किया लेकिन सामने वाले व्यक्ति ने कुछ और ही पासा फेंक दिया या स्थितियां कुछ और हो गईं लेकिन आपको तो अपनी योजना ही क्रियान्वित करनी है, जिद है कि मैं तो अपनी योजना के अनुसार ही काम करूंगा या करूंगी। तो आप निश्चित रूप से मात खाएंगे। अगर कुछ आपके हिसाब से नहीं चल रहा है तो योजना में बदलाव लाइये। योजना को बदलिए। पैंतरा बदलिए। दांव दूसरा लगाइये। लेकिन किसी भी हालत में लकीर के फकीर मत बनिए।

कोई बात किसी संदर्भ में महान पुरुषों द्वारा कह दी जाती है। उसका देश, काल एवं परिस्थिति के हिसाब से आंकलन, पुनर्मुल्यांकन किया जाना अति आवश्यक है। हर बात, हर व्यक्ति के लिए हर समय सही हो, ऐसा जरूरी नहीं है।

हालांकि मैं मानता हूं कि कुछ बातें काल, देश की सीमाओं से पार की होती हैं जिन्हें हमेशा ही आजमाया जा सकता है लेकिन डाक्टर की नजर से देखिए कि वह एक ही रोग से पीड़ित दो व्यक्तियों को अलग अलग दवाइयां भी देते हैं और उन्हें अलग अलग परहेज भी बताते हैं।

एक दवा जो आपको सही कर सकती है वो दूसरे व्यक्ति को बीमार भी बना सकती है। आपने देखा–सुना होगा, एक दवा पेन्सिलिन है। जिसके प्रयोग पूर्व यह ताकीद की जाती है कि रोगी को उसका निगेटिव रिएक्शन तो नहीं होता है। रामबाण दवा है लेकिन कुछ लोगों को वह माफिक नहीं आती है और नुकसान कर देती है।

इसी प्रकार जो युक्ति है, वह हमेशा युक्ति ही रहेगी। ऐसा जरूरी नहीं होता है। कभी कभी इन युक्तियों से मुक्ति भी पानी होती है क्योंकि आगे बढ़ना होता है। जीवन आगे बढ़ने का नाम है मित्रो। इसलिए तय कर लो कि लकीर के फकीर नहीं बनेंगे, लचीले और खुले विचारों का स्वागत करेंगे। **जय गुरुदेव!**

श्री गुरूजी उवाच:
(साधना खण्ड)

कलियुग जैसा युग नहीं आएगा

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

..गत अंक से जारी

बाबा नानक साहिब जी सद्ग्रन्थ में फरमान करते हैं–

एक भगति भगवान्, जिहि प्राणी के नाहिं मन
जैसे सूकर श्वान, नानक मानहु ताहि तन।।

ऐ व्यक्ति का शरीर सुअर और कुत्ते की तरह समझना चाहिए जो जिस काम के लिए आया है, और वह काम न करे उसे क्या कहा जाएगा। इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाएगा। मानव का एक ही कर्म है, वह है– प्रभु का स्मरण, उसका भजन, उसका कीर्तन, उसके गुणों का गान करना। कलियुग की काली आंधी से आपको डरना नहीं चाहिए। इस तामिस्रा से आपको भयभीत नहीं होना है। तामसी रात का भय प्रभुनाम से दूर हो जाता है। कलियुग की कालिमा से कैसा भय। इससे विचलित नहीं होना चाहिए। आप अपने भीतर संकल्प को जन्म दें, भय और आशंका से रहित होकर उसको चरितार्थ किया जाये। अर्थात् यह सबसे सुन्दर युग है, हमें ऐसा स्वीकार कर लेना चाहिए और इसी संकल्प के साथ हमें परमात्मा का स्मरण, कीर्तन और भजन करना चाहिए। जो परमात्मा के स्मरण में अपने आपको समर्पित कर दें, कलि–काल की कथा ही नहीं रहेगी।

कीर्तन की महिमा और मानव

कीर्तन का फल तभी मीठा होगा, जब हमारे भीतर

मानवता आ जाएगी। मानव का प्रमुख धर्म मानवता है। मानवता मानवी की ज्योति है, प्रकाश है और धर्म कर्म है। त्रिभुवन के सभी प्राणियों में मानव को श्रेष्ठ कहा गया है। देवता और दानवों को इस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। बिना मानवता के कुपात्र में कोई चीज डाल दोगे, दूध डाल दोगे, वह भी अपवित्र हो जाएगा। खटाई दूध में डाल दोगे, वह भी फटकर पनीर बन जाएगा। दही बन जाएगा, खट्टापन आ जाएगा। अत: मानवता को जन्म देना आवश्यक है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने मानवता को ठोकर मार कर अहं का अटूट हास किया। वे सभी कराल काल के गाल के ग्रास बन गए और आज भी उन्हें इतिहास क्षमा नहीं कर रहा है।

रावण ने भी सदाशिव के लिए तपस्या की, बहुत भक्ति की, भजन किया। उग्र तपस्या उनकी साधना का ज्वलंत प्रमाण है। इसी प्रकार अनेक शक्तिशाली पुरुष हुए, किन्तु अपने अहंकार का परित्याग नहीं कर पाये और विनाश का ही चयन किया। जो मानवता के साधक रहे, वे सफल रहे और उन्होंने इतिहास में स्वर्णाक्षरों में नाम लिखा लिया। राजा भरत, सुग्रीव,हनुमान, अंगद, कुब्जा, मीरा आदि अपने त्याग और समर्पण के कारण विश्वविश्रुत हुए। मानवता कोई पदार्थ नहीं है, अपितु मानव को अपने भीतर सद्भावों को जन्म देना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहं और ईर्ष्या को तिलांजलि देकर, दया, करुणा, सहायता, अहिंसा, दान आदि से महनीय गुणों वाला हो जाता है। राजा हरिश्चन्द्र, राजा शिवि, भामाशाह आदि अनेक गणमान्य पुरुष हुए हैं जिन्होंने मानवता को सार्थक किया है। महाकवि कहते हैं कि इस विश्व में सबकुछ है, किन्तु कर्म की प्रधानता है। जो संकल्प शक्ति के साथ क्रियाशील हैं, वही स्थायित्व को प्राप्त करता है-

बहाना नहीं, सच्चाई को खोजो कि कलियुग के समान क्या और कोई युग भी आयेगा अथवा नहीं आयेगा ? ऐसा युग कभी नहीं आयेगा।

यह नीड मनोहर कृतियों का,
यह विश्व रंग कर्मस्थल है।
है लग रही परम्परा यहां,
ठहरा जिसमें जितना बल है। (कामायनी)

यह संसार ईश्वर की सुन्दर सृष्टि है। यहां मानव का जन्म कर्म करने के लिए हुआ। अत: इसे कर्मजीवी कहा गया। यहां धर्म की अपार परम्परा है, वही मानव स्थायित्व को अर्थात् प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है, जिसके मन में अदम्य संकल्प शक्ति है, जो मानवता के हित में अपने कर्म समर्पित करता है, वही मानव श्रेष्ठ है-

साहित्यसंगीतकलाविहीन:,
साक्षात्पशु: पुच्छविषाण हीन:
तृणन्न खादन्नपि जीवमान:
तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।। (नीतिशतकम्)

धर्मविहीन मनुष्य पूंछ और सींग से रहित पशु के समान है। सभी जीवों में मानव ही एक मात्र जीव है, जो विवेक के साथ जीवन जीता है तथा विवेक के अनुसार ही कर्म करता है। मानव वही है, जो परहित में तत्पर रहे-

मानव वही है जो परहित में तत्पर रहे।
वह खर है जो खुद के लिए जीये मरे।।

मानवता ही सर्वश्रेष्ठ निधि है, जो मानवता का परित्याग कर देते हैं, केवल अपने स्वार्थ के हित जीते हैं, पशुतुल्य हैं।

मानवता न होने के कारण भगवान राम ने रावण का भी वध किया, कुंभकर्ण का वध किया, मेघनाद एवं अहिरावण का वध किया। अमानवीय व्यवहार करने वाले अनेक राक्षसों का संहार किया। श्रीनृसिंह का अवतार लेकर हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रहलाद की रक्षा की। जब-जब अमानवीय कृत्य चरम सीमा को पार करने लगते हैं, तब-तब विष्णु अवतार लेकर दुष्टों का विनाश करके साधुओं की अर्थात् सत्पुरुषों की रक्षा करते हैं।

हमें सर्वप्रथम मानव बनना होगा, अर्थात् स्व के लिए दूसरों को दुख न पहुंचायें। यदि हम मानव बने बिना भगवान का भजन, कीर्तन आदि करेंगे, जो हम दानव के रूप में परिणत हो जायेंगे। शक्ति भगवान के नाम की हमारे अन्दर होगी, पर उस बल से हम दानवता का ही प्रयोग करेंगे। मानवता के सिद्धान्त और आदर्श स्वीकार कर जीवन में उतारना अनिवार्य है। किसी ने सत्य ही नीतिवाक्य कहा है-

पिबन्ति नाम्भ: स्वयंमेव नद्य:
फलन्न खादन्ति तथैव वृक्षा:
धाराधरो वर्षति नात्महेतो:
परोपकाराय सतां विभूतय:। (नीतिशतकम्)

सत्पुरुषों का जन्म परोपकार अर्थात् परहित चिन्तन के लिए ही होता है। वृक्ष तीक्ष्ण धूप का अपने शिर पर रखते हैं, किन्तु आश्रितों को छाया ही प्रदान करते हैं, बिना किसी स्वार्थ के। वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते हैं,

श्री सुदर्शन संदेश के सदस्य बनें और दूसरों को भी सदस्य बनाएं

'श्री सुदर्शन संदेश' के सदस्य बनकर भगवान श्रीमन् नारायण के लीला चरित्, श्री गुरु महाराज जी के आध्यात्मिक प्रवचन, विचार व अन्य आध्यात्मिक शास्त्रीय जानकारी घर बैठे प्राप्त करें। आपको श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना व समाचार भी निरंतर प्राप्त हो सकेंगे।

**एक पत्रिका का मूल्य 15 रुपये है।
वर्ष का मूल्य 180 रुपये बनता है।
लेकिन आप वार्षिक शुल्क केवल 100 रुपये देकर इसके सदस्य बन सकते हैं।**

पैकिंग और पोस्टिंग का खर्च भी नहीं लिया जाता है। यह आपको करीब आधे खर्च में घर बैठे प्राप्त होगी।

सम्पर्क करें :
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल-सूरजकुण्ड मार्ग, फरीदाबाद - 121003

दूरभाष 8383821967 नारंग जी
7838169040 प्यारेलाल जी

E-mail shrisidhdataashram.org@gmail.com
website www.sidhdataashram.org
www.sda.org

नदियां स्वयं पानी नहीं पीती हैं। गायें अपना दूध मानव समुदाय को प्रदान करती हैं। सत्पुरुष भी त्याग की भावना रखते हुए दूसरों को सुख वितरित करते हैं।

आहार-विहार

मेरे प्रेमियो

औषधि बीमारियों के लिए ही बनी है और वह औषधि बार-बार नहीं बदलते। जब वह अनुकूल रहती है, लोग उसे लेते रहते हैं। इसी प्रकार मानवता का होना भी आवश्यक है, तभी दवाओं का प्रयोग होगा, इससे पूर्व नहीं हो सकता। मानवता लाने के लिए कुछ हमको विचार करने पड़ेंगे, क्योंकि जब तक हमारे आहार-विहार, आदि मानवता के अनुकूल नहीं होंगे, तब तक हम मानव कहलाने के अधिकारी नहीं होंगे। हमारे बाह्य और आभ्यंतर में मानवीय गुणों का समावेश होना बहुत आवश्यक है। हम खान-पान और रहन-सहन के प्रति सावधानी रखें ताकि कुछ भी अमानवीय न लगे।

यह हम शाकाहारी की अपेक्षा मांसाहारी हैं और मदिरापान करते हैं हमारे में सात्विक गुणों का समावेश कैसे होगा? आहार-विहार के कारण विचारों में शुद्धिकरण होता है, संस्कार जन्म लेते हैं, नैतिकता का प्रादुर्भाव होता है तथा मानवता सुस्थित होती है। यदि हमारा आहार संस्कृति और सभ्यता के विपरीत है, मानवता सुरक्षित नहीं है। हम तो दानव के दानव ही रह गये। धर्म विरुद्ध आचरण के कारण हमारे भीतर दानवी वृत्ति की वृद्धि होगी। सत्य यह है कि हम दैत्य ही कहलायेंगे। हम तो दुष्ट बन गये, क्योंकि हमारा भोजन मानवता का है ही नहीं। देव, ईश्वर और मानव का भोजन मांस हो सकता है क्या?

....क्रमशः जारी

मंदिर का शीत काल समय

प्रात: 5:30 से 6:00 बजे मंगला आरती
प्रात: 6:00 से 7:00 बजे आराधना
प्रात: 7:00 से 7:15 बजे अर्चना
प्रात: 7:15 से 7:30 बजे बाल भोग
प्रात: 7:30 से 8:00 बजे शृंगार व आरती
प्रात: 8:00 से 11:45 मध्याह्न दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न 11:45 से 12:15 बजे आराधना व राजभोग
मध्याह्न 12:15 से 1:00 बजे दरबार /देव दर्शन

मध्याह्न 1:00 से 4:00 बजे विश्राम (कपाट बंद)

सायं 4:00 से 5:15 बजे दरबार/ देव दर्शन
सायं 5:15 से 5:45 बजे आराधना
सायं 5:45 से 6:10 बजे अर्चना
सायं 6:10 से 6:30 बजे राजभोग
रात्रि 6:30 से 8:15 बजे आरती व दर्शन
रात्रि 8:15 से 8:30 बजे शयन भोग व दर्शन
रात्रि 8:30 विश्राम (कपाट बंद)

मंदिर का ग्रीष्मकाल समय

प्रात: 5:30 से 6:00 बजे मंगला आरती
प्रात: 6:00 से 7:00 बजे आराधना
प्रात: 7:00 से 7:15 बजे अर्चना
प्रात: 7:15 से 7:30 बजे बाल भोग
प्रात: 7:30 से 8:00 बजे शृंगार व आरती
प्रात: 8:00 से 11:45 मध्याह्न दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न 11:45 से 12:15 बजे आराधना व राजभोग
मध्याह्न 12:15 से 1:00 बजे दरबार /देव दर्शन

मध्याह्न 1:00 से 4:00 बजे विश्राम (कपाट बंद)

सायं 4:00 से 6:15 बजे दरबार/ देव दर्शन
सायं 6:15 से 6:45 बजे आराधना
सायं 6:45 से 7:10 बजे अर्चना
सायं 7:10 से 7:30 बजे राजभोग
रात्रि 7:30 से 8:45 बजे आरती व दर्शन
रात्रि 8:45 से 9:00 बजे शयन भोग व दर्शन
रात्रि 9:00 विश्राम (कपाट बंद)

दोपहर 1 से 4 बजे तक आश्रम/मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है।

प्रात: 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

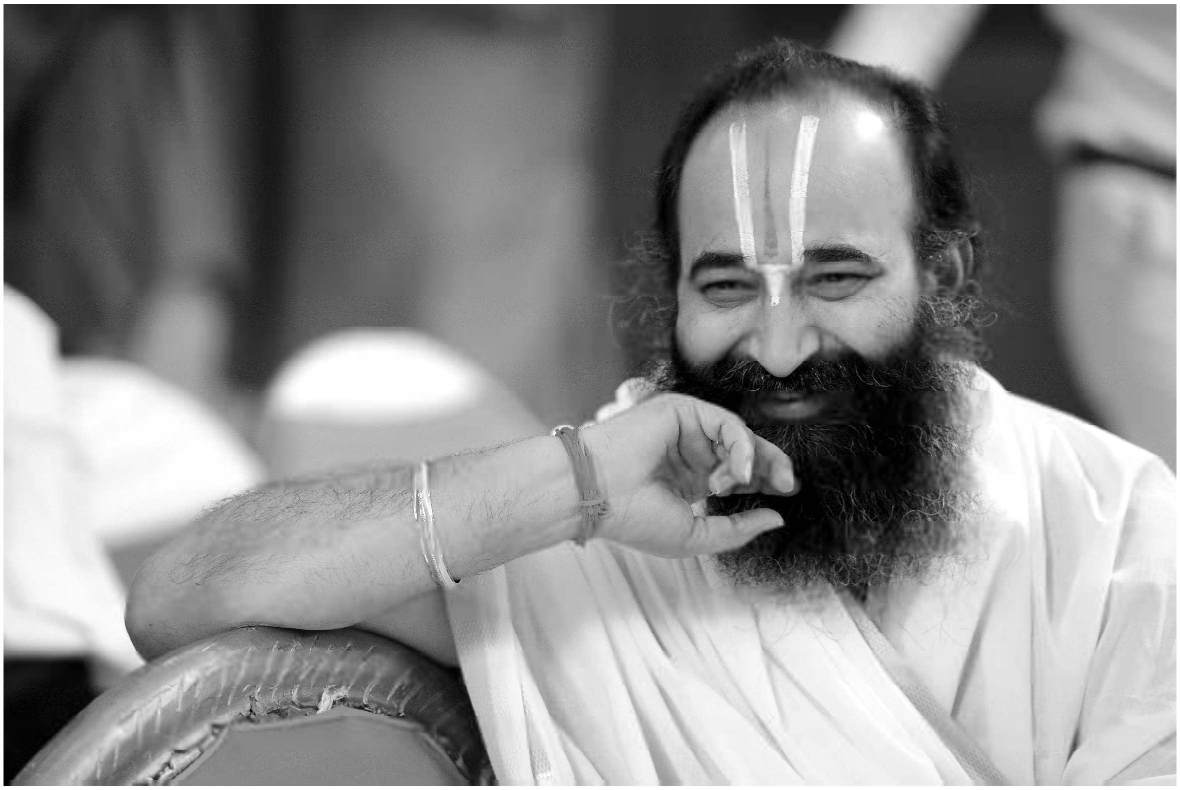

गुरु पूर्णिमा और गुरुतत्व

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा एवं व्यास पूर्णिमा कहते हैं। गुरु पूर्णिमा गुरु पूजन का दिन है। गुरु पूर्णिमा का एक अनोखा महत्त्व भी है। अन्य दिनों की तुलना में इस तिथि पर गुरु तत्व सहस्र गुना कार्यरत रहता है। इसलिए इस दिन किसी भी व्यक्ति द्वारा जो कुछ भी अपनी साधना के रूप में किया जाता है, उसका फल भी उसे सहस्र गुना अधिक प्राप्त होता है।

भगवान वेदव्यास ने वेदों का संकलन किया, 18 पुराणों और उपपुराणों की रचना की। ऋषियों के बिखरे अनुभवों को समाज भोग्य बना कर व्यवस्थित किया। पंचम वेद महाभारत की रचना इसी पूर्णिमा के दिन पूर्ण की और विश्व के सुप्रसिद्ध आर्ष ग्रंथ ब्रह्मसूत्र का लेखन इसी दिन आरंभ किया। तब देवताओं ने वेदव्यासजी का पूजन किया। तभी से व्यासपूर्णिमा मनायी जा रही है।

इस दिन जो शिष्य ब्रह्मवेत्ता सदगुरु के श्रीचरणों में पहुँचकर संयम-श्रद्धा-भक्ति से उनका पूजन करता है उसे वर्षभर के पर्व मनाने का फल मिलता है। भारत में अनादिकाल से आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा पर्व के रूप में मनाया जाता रहा है। गुरुपूर्णिमा का त्यौहार तो सभी के लिए है। भौतिक सुख-शांति के साथ-साथ ईश्वरीय आनंद, शांति और ज्ञान प्रदान करनेवाले महाभारत, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भागवत आदि महान ग्रंथों के रचयिता महापुरुष वेदव्यासजी जैसे ब्रह्मवेत्ताओं का मानव ऋणी है।

भारतीय संस्कृति में सदगुरु का बड़ा ऊँचा स्थान है। भगवान स्वयं भी अवतार लेते हैं तो गुरु की शरण जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण गुरु सांदीपनि जी के आश्रम में सेवा तथा अभ्यास करते थे। भगवान श्रीराम गुरु वशिष्ठजी के चरणों में बैठकर सत्संग सुनते थे। ऐसे महापुरुषों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए तथा उनकी शिक्षाओं का स्मरण करके उसे अपने जीवन मे लाने के लिए इस पवित्र पर्व 'गुरुपूर्णिमा' को मनाया जाता है।

गुरु का महत्व

गुरुदेव वे हैं, जो साधना बताते हैं, साधना करवाते हैं एवं आनंद की अनुभूति प्रदान करते हैं। गुरु का ध्यान शिष्य के भौतिक सुख की ओर नहीं, अपितु केवल उसकी आध्यात्मिक उन्नति पर होता है। गुरु ही शिष्य को साधना करने के लिए प्रेरित करते हैं, चरण दर चरण साधना करवाते हैं, साधना में उत्पन्न होनेवाली बाधाओं को दूर करते हैं, साधना में टिकाए रखते हैं एवं पूर्णत्व की ओर ले जाते हैं। गुरुके संकल्प के बिना इतना बड़ा एवं कठिन शिवधनुष उठा पाना असंभव है। इसके विपरीत गुरु की प्राप्ति हो जाए, तो यह कर पाना सुलभ हो जाता है।

सदगुरु वैद्य वचन बिस्वासा।
संयम जहं न विषय के आसा।।

श्रीरामचरितमानस की यह पावन पंक्ति जिसका

गुरु ही शिष्य को साधना करने के लिए प्रेरित करते हैं, चरण दर चरण साधना करवाते हैं, साधना में उत्पन्न होनेवाली बाधाओं को दूर करते हैं।

आशय है- सदगुरु भगवान् वैद्यराज है। इनके वचन पर विश्वास करना, यह ही भवरूप मिटाने के लिए औषधि सेवन है।

सदगुरु भगवान् वैद्य हैं, उनका वचन औषधि है। समर्पण ही यहां संयम है। विषयासक्ति से परहेज ही परहेज है। विषयों से मन को दूर रखना परहेज है। गुरुदेव के वचन पर विश्वास ही औषधि है और सदगुरु देव को इस रूप में देखें कि भवरूप मिटाने वाले हैं।

भवरोग क्या है? भव कहते हैं संसार को और रोग है इसमें बार बार आना जाना। तब तो एक ही बात कही जा सकती है कि आना जाना रोग क्यों है? ऐसे तो स्वस्थ आदमी भी आते जाते हैं। आना जाना रोग नहीं है पर रोग के कारण आना जाना रोग है। औषधालय में हम लोग जाते हैं। तो ऐसे जाने में कोई कठिनाई नहीं है। हम लोग रोगियों को देखने जाते हैं, देखकर जो सेवा होती है वह करते हैं। सहानुभूति रखते हैं फिर लौट कर आ जाते हैं पर हम रोगी नहीं होते। जिस अस्पताल में डाक्टर आते जाते हैं उसी अस्पताल में रोगी भी आते जाते हैं लेकिन अंतर इतना है कि एक बीमार होकर आते हैं, और दूसरे बीमारी दूर करने आते जाते हैं।

बस यही अंतर है हम लोगों में, सदगुरुओं में और संतों में। हम रोग के कारण संसार में आते जाते हैं और

सदगुरु भगवान् रोग मिटाने के लिए संसार में आते जाते हैं। पर वे रोगी नहीं हैं। देखो, संसारी और साधु में यही तो अंतर है। जो रोग के कारण आवे वह संसारी है। और जो रोगी के कारण आये वह साधु है। रोग के कारण नहीं आते रोगी के कारण आते है। रोग की दुर्बलता जिसमें हो वह सामान्य जीव है, लेकिन रोगी पर करुणा के कारण जिसके मन में दुर्बलता आ जाए, करुणा के कारण वह संत है।

सदगुरु से देखा नहीं जाता।

मुझे एक बात याद आई। भगवान् श्रीकृष्ण छोटे से हैं। मैया यशोदा आज श्रीयुमना जी की पूजा के लिए जा रही हैं। दीपक सजाए हैं एक थाल में। गोपियां भी हैं संग में। श्रीकृष्ण ने कहा-मैया, कहां जा रही हो? मैया ने कहा श्रीयमुना जी की पूजा करने। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं भी चलूंगा मैया मुस्कुरा कर बोली-तू कब से भक्त हो गया? तुम्हारी तो रोज़ की शिकायते चोरी की हैं।

कन्हैया ने कहा कि – मैया कोई पुजारी हो जाए तो क्या उसे चोर ही कहा जायेगा। इस समय तो मैं पुजारी ही हूं। मैया बोली, अच्छा चल। साथ गए। मैया ने दीए जलाए मैया के साथ साथ अन्य गोपियों ने भी दीये जलाए। यमुनाजी की आरती उतारी और दीये बहा दिए। गोपियां और मैया हाथ जोडक़र बैठ गए। सबने आंख बंद कर लीं और यमुना जी से प्रार्थना करने लगीं। हे मैया, मेरा कन्हैया सदा प्रसन्न रहे। सदा सानंद रहे। श्री कृष्ण कभी यमुनाजी की लहरों की तरफ देखते हैं, कभी दीयों की तरफ देखते हैं और कभी माताओं की ओर देखते हैं। कन्हैया ने देखा कि सबने आंख बंद कर रखी हैं। मौका अच्छा है बस उतर गए यमुना जी में। अब छोटे से कन्हैया कमर-कमर तक जल में खड़े हैं। हाथ से इशारा कर रहे हैं। इधर आओ, इधर आओ।

अब लहरों में बहते हुए दीये कुछ तो बह गए, कुछ कन्हैया के पास आ गए। कन्हैया ने उन सब दीयों को समेटा और अपने पीतांबर में बांध लिया और पोटली रख कर बैठ गए। मैया ने आंख खोली। प्रणाम किया जी को। कन्हैया तुम भी प्रणाम कर लो। हां, मैया मैंने भी यमुना प्रणाम किया। चलो अब घर चले। सब चलने लगे। कन्हैया ने अपनी पोटली उठाई और चल पड़ा मैया बोली ये क्या है?

कन्हैया बोले, मैया किसी दूसरे की पोटरी खोल कर नहीं देखनी चाहिए। मैया मुस्कुराई और बोली- चोर की जरूर देखनी चाहिए। कन्हैया बोले मैया तेरी बहुत बुरी आदत है। गोपियों ने झूठा आरोप लगाया और तुम मुझे चोर कहती हो। अच्छा देखो। पोटली खोली तो उसमें दीये थे। मैया बोली क्यों कन्हैया तुम्हारे बांधने के लिए हमने यह दीये बहाए थे? बहने क्यों नहीं दिये। कन्हैया सिर झुका कर बोले, मैया मैं अपने स्वभाव से विवश हूं। आपने तो दीये बहा दिए और आंख मूंद ली। लेकिन मेरी एक आदत है कि मैं किसी को बहते हुए नहीं देख पाता। इसलिए मैं भी यमुनाजी में उतर गया। मैं इन दीयों को बहते हुए नहीं देख पा रहा था तो मैंने सोचा कि बहुत दिन हो गए बहते बहते। अब इधर आ जाओ। कब तक इस धारा में बहोगे। और बहते बहते बुझ जाओगे। दीया यमुना जी में बहते बहते बुझ जाता है। बुझने के पहले इधर आ जाओ, मैं इशारा कर रहा हूं मेरे पास आ जाओ। तो कुछ दीये आ गए बुझने से पहले। मैंने उन्हें अपने हाथ में उठा लिया और कहा कि अब तुम बुझ भी जाओ तो कोई बात नहीं क्यों कि मेरे हाथ में आ गए हो। और पोटली में बांध लिया। इनको सिर पर रखूंगा। मैया बोली इतने ही परोपकारी हो बुला तो तो सब दीयो को क्यों नहीं बांधा? कन्हैया बोले कि मैं सबको रहा था लेकिन जो आ गए उन्हीं को अपने पीतांबर में बांध कर अपने सिर पर रखूंगा कि आज से तुम्हारा बोझ मेरे सिर पर है।

भगवान् तो सबको निमंत्रण दे रहे हैं कि आ जाओ,

तुम आ जाओ नहीं तो बहते- बहते बुझ जाओगे। ये जीवन का दीया कब इस धारा में बहते बहते बुझ जाए। मेरी शरण में आ जाओ तो तुम्हारा भार मैं स्वीकार कर लूंगा। भगवान् श्रीकृष्ण युमनाजी में उतर गए । दीयों को बहते हुए नहीं देख पा रहे थे। क्यों? क्योंकि श्रीकृष्ण भी गुरुदेव हैं। श्रीकृष्णं वंदे जगतगुरु। भगवान गुरुदेव की तरह हैं। धर्म की धारा में उतर गए। उस धर्म की धारा में उतर गए जो विधि निषेध की धारा थी। यह करो, यह मत करो। यह कर्म की जो धारा है उसमें बहते बहते हम कई बार बुझे हैं, कई बार जले हैं। भगवान् गुरुदेव की तरह हैं। सबको बुलाते हैं कि हमारी शरण में आ जाओ। इसी तरह इस धारा में बहते हुए को देख कर गुरुदेव भी भगवान् की तरह अवतार लेकर आते हैं कि अब बहुत बहे, अब हमारी शरण में आ जाओ।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः

ये भवरोग मिटेगा। परन्तु औषधि का सेवन करो। औषधि कौन सी है?

सदगुरु वैद्य वचन बिस्वासा।

भोगों की प्राप्ति भले ही अप्राप्त की प्राप्ति है। पर भगवान् की प्राप्ति तो प्राप्त की प्राप्ति है। भगवान् सामने हैं उनका कोई पर्दा भी नहीं है। वह अगर पर्दा उठा कर सामने आ जाएगा तो भी क्या देखने वालों से देखा जा सकेगा? भगवान् सामने हैं। लेकिन एक को दिख रहे हैं एक को नहीं दिख रहे हैं। प्रसंग वही है पर भिन्न भिन्न अर्थों में भी हमें उसे देखना चाहिए। भगवान् शंकर और सती माता दोनों आए हैं। दोनों को भगवान् दर्शन दे रहे हैं। पर शंकर भगवान् तो रामजी को देखकर भाव से भरे हुए-

पुनि पुनि पुलकित कृपा निकेतन।

बार बार पुलकित हो रहे हैं, नेत्रों में प्रेमाश्रु भर आए हैं। शंकरजी स्नेह से भर गए हैं। और सती माता संशय से

।। श्री गुरूहरिः ।।

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा

संचालित ***चिकित्सा शिविर***

प्रत्येक रविवार प्रातः नौ बजे से उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरु महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

भर गई हैं। कितना अद्भुत संकेत है कि भगवान् शंकर किस भाव से भरे हैं, और कहते क्या हैं–

जय सच्चिदानंद, जग पावन।

अस कहि चलेउ मनोज नसावन।।

शंकर भगवान्, सच्चिदानंद भगवान् आपकी जय हो, जय हो, जय हो के भाव से भरे हैं। पर सतीजी संशय से भरी हैं। जीवन का सत्य भी यही है। सदगुरु कौन? जो परमात्मा से भरा हो और भाव का अर्थ है जहां अभाव न हो। जिसके लिए परमात्मा का अभाव नहीं, वही तो भाव में है।

नासतो विद्यते भावो ना भावे विद्यते संत:।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण भी तो यही कहते हैं।

सदगुरु कौन? जो परमात्मा के भाव से भरा हो। परमात्मा को देख कर जो स्नेह से भरा हो वही सदगुरु है। और परमात्मा सामने हो तो भी नहीं देख पाने के कारण जो संशय से भरा हो वही शिष्य है। यही गुरु और शिष्य में भेद है। जो संशय से भरा हो, वह शिष्य है, और जो भगवान् के भाव से भरा हो, वह सदगुरु है । भरे दोनो हैं। एक स्नेह से और एक संशय से। अब गुरुदेव कहते हैं भाई जैसे किसी एक की बोतल में खारा जल भरा और दूसरे की बोतल में मीठा जल भरा हो। पहला कहे कि जरा मीठा जल डालो इसमें। तो वह कहेगा कि पहले ये तो खाली करो जो भरा है। सदगुरु भी कहते हैं कि हम अपने रस से तुम्हें भर देंगे, पर पहले उसे तो खाली करो जो पहले भरा है। हम तुम्हें उसी रस से भर देंगे, पर तुम जिससे भरे हो उसे खाली करो। पहले संशय का खारापन निकालो। संशय का खारापन कब निकलेगा? ऐसे तो भरा हुआ खारापन नहीं निकलेगा।

ढक्कन खुले, बोलत उलटी की जाए

सब बाहर निकल जाएगा।

तो ये ढक्कन क्या है। ये मन ही बोतल है, कपट का ढक्कन लगा है। और ये सीधी खड़ी क्या है। ये अकड़ है अभिमान की। अभिमान छोड़ कर, कपट छोड़कर, अगर यह झुक जाए तो इसका सारा संशय बाहर निकल जाए। और जब संशय बाहर निकल जाता है तब गुरुदेव परमात्मा के रस से इसे भर देते हैं, इसलिए आपने देखा होगा कि बोतल ढक्कन खोलकर अगर गिर जाए तो सारा जल बाहर निकल जाता है। तो हम कपट छोड़कर गुरुदेव के चरणों में गिर जाए तो सब संशय का जल बाहर निकल जाता है।

'सदगुरु मिलै जाहि जिमि संशय भ्रम समुताई।'

लेकिन हम जाते कहां हैं? जहां ये विश्वास होता कि यहां कुछ मिलेगा। और इसके लिए विश्वास चाहिए। तब गोस्वामीजी कहते हैं –

सदगुरु वैद्य, वचन विस्वासा। इसलिए हम लोगों के यहां एक शब्द है प्रणाम के लिए– दण्डवत। दण्ड कहते हैं लकड़ी को। लकड़ी की तरह गिर जाना, तब दण्डवत है। आजकल तो यह केवल एक शब्द ही रह गया है। एक सज्जन कहते हैं। दण्डवत महाराज। पर वो पड़े नहीं थे, खड़े थे। तो किसी ने कहा यह कैसा दण्डवत। बोले, दण्डवत तो आए हैं, दण्डवत हैं। पर खड़े हैं। ऐसा दण्डवत तो 'दण्डवत' है। दण्ड के समान लाठी के समान खड़ा है। इसलिए भई ये झुकना आ जाए और लकड़ी की तरह झुकना आ जाए, हमारे झुकने में भी सरलता हो। सती जी को संशय हुआ। संशय होना भी बुरा नहीं है। पर इस संशय को समझकर स्वीकार कर लेना यही सबसे बड़ी बात है। एक सज्जन बोले कि सबसे बड़ा ज्ञान क्या है? हमने कहा अपने अज्ञान का ज्ञान, सबसे बड़ा ज्ञान है। यहीं से शुरूआत होती है। और मुझे तो लगता है जिसे अपने में अज्ञान दिखता है उसी को गुरुदेव में ज्ञान दिखता है। और जिन्हें गुरुदेव में ज्ञान दिखता है उन्हीं को जगत में भगवान् दिखता है। अपने में अज्ञान, गुरुदेव में ज्ञान, तो जगत में भगवान।

एक सज्जन ने एक और तर्क किया कि जब भीतर

ही अज्ञान है तो दिखेगा क्या? ज्ञान हो तब तो दिखे। अज्ञान में तो कुछ नहीं दिखता। हमने कहा बात तो आपकी सही है कि अज्ञान में तो कुछ नहीं दिखता। इसे ऐसे देखना चाहिए कि अंधेरे में कुछ नहीं दिखता पर अंधेरा तो दिखता है। एक बात और है। क्या? अंधेरा भी आंख वाले को ही दिखता है। और जिसमें आंख ही नहीं है उसे अंधेरा भी नहीं दिखेगा। और जिसे अंधेरा नहीं दिखा उसे उजाला भी नहीं दिखेगा। तो जिसके पास अपने अज्ञान को देखने की आंख होती है उसी को गुरुदेव के ज्ञान को देखने की आंख होती है और उसी के पास भगवान् को देखने की आंख होती है। तो भगवान तो सामने है, किंतु सती जी को संशय तो हुआ, पर उस संशय को स्वीकार नहीं कर पाई। यही बोतल में ढक्कन लगा हुआ है। और तुलसीदास क्या लिखते हैं–

जद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी।
हर अंतरजामी सब जानी।।

सतीजी ने प्रकट होकर कुछ नहीं कहा। क्यों नहीं कहा? एक अद्भुत बात है। दो समस्याएं हैं। एक तो हम समझते नहीं हैं कि यह एक समस्या है। दूसरी समस्या यह है कि हम नहीं समझे, यह कहते नहीं हैं। जैसे किसी को सुनाई न पड़े। एक बात तो यह है। और दूसरी बात यह कि दूसरे को पता न लगने दे कि हमें सुनाई नहीं पड़ता। एक आदमी को सुनाई नहीं पड़ता था। पर वह किसी को पता नहीं लगने देता था। उसका मित्र बीमार था। देखने चला गया। घरवालों ने कहा कि साथ किसी को ले जाओ। बोला कि सब जगह बदनामी करानी है कि हमें सुनाई नहीं देता। इतना तो हम सुन लेते हैं कि काम चल जाएगा। मित्र के यहां गया। मित्र से पूछा, कहो तबियत कैसी है? जिनको कम सुनाई देता है वे शायद सोचते हैं कि सबको ही ऐसे ही सुनाई देता है। इसलिए जोर से बोलते हैं। बोला तबियत कैसी है। मित्र परेशान था। बोला क्या सुनाएं, मर रहे हैं। उसने सोचा कि ये कह रहे हैं कि यह पहले से ठीक है। तो तुरंत बोले कि भगवान कि बड़ी कृपा है, जल्दी ठीक हो जाओगे। मित्र को बहुत बुरा लगा। तो तुरंत पूछा दूसरा सवाल।

बोला– कौन से डॉक्टर से इलाज चल रहा है? वह तो खीज गया था तो बोला यमराज का। उसे सुनाई तो नही दिया, पर ये तुरंत बोला– वो तो बहुत अच्छे डाक्टर हैं। उनका तो रोज का यही काम है। तुम्हे भी जल्दी ठीक कर देंगे। खाने को क्या बताया ? वह तो झुंझला गया था। बोला पत्थर। उसने कहा बड़ा हल्का भोजन है। जल्दी पच जाता है, स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। एक तो सुनाई नहीं पड़ रहा सही से, दूसरा किसी को पता नहीं लगने देना। लेकिन पता नहीं लगे एसे दिखावे से क्या उसका बहरापन पता लग नहीं रहा है। कोई नासमझ अपनी नासमझी को स्वीकार न करे, तो क्या अनुभवी पुरुष समझ नही लेंगे। और यहां भी यही हुआ है। सतीजी ने कहा नहीं है कि मुझे संशय है।

जद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी।
हर अंतरजामी सब जानी ॥

शंकरजी जानते हैं। हम लोग समझते हैं कि गुरुजी

क्या समझेंगे। गुरुजी को कुछ पता नहीं चलेगा। जो शिष्य सोचते हैं कि गुरुजी को कुछ पता नहीं, जबकि गुरुजी को सब कुछ पता है तो क्या यह कुछ पता नहीं होगा। जो गुरुजी परमात्मा का रहस्य जानते हैं वे हमारे मन का रहस्य नहीं जानेंगे। शंकरजी समझ गए कि मन में क्या हो रहा है। अब गुरुदेव की महिमा देखो। सतीजी ने कहा नहीं, कि हमें संशय है। रोगी ने कहा नहीं कि वह बीमार है, पर डाक्टर समझ गया। तुम्हें गडबड़ी है कुछ तो कहना चाहिए। भगवान् शंकर ने बड़ी करुणा करके यह कहा कि यह संशय मत रखो, कि रामजी भगवान् हैं या नहीं। भगवान अनेक रूपों में प्रकट होते हैं। इस रूप में प्रकट हुए हैं।

सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा।
सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं। शंकर भगवान् ने कहा कि सतीजी, धैर्यवान् मुनि पवित्र मन से जिनका ध्यान करते हैं, वेद भगवान् नेति नेति कहकर जिनके स्वरूप का निरूपण करते हैं, ये वही भगवान् हैं। इसलिए भगवान को देखो। जब शंकरजी ने कहा था– तो विश्वास रखना चाहिए था।

सदगुरु वैद्य वचन विश्वासा।

अज्ञान का रोग हुआ। अज्ञान के कारण संशय आया। गुरुदेव ने औषधि दी। गुरुदेव के वचन पर विश्वास, यही अज्ञान के रोग की निवृत्ति का एकमात्र उपाय है। मैं आपको एक बात बताऊं। बालक का जन्म होता है। जन्म होने के बाद वह मां से बाद वह मां से पूछता है कि पिताजी कौन हैं। मां परिचय कराती है कि ये तुम्हारे पिताजी हैं। अब बालक मां के वचन पर विश्वास न करे तो पिता को समझने का कोई उपाय नहीं है उसके पास। चाहे जितनी अकल लगावे। माता के वचन पर विश्वास करके ही पिता को जाना जा सकता है इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है। इसी तरह गुरुदेव के वचन पर विश्वास करके ही स्वयं और परमात्मा को जाना जा सकता है।

नान्या पंथा विद्यतेऽय – वेद भगवान् कहते हैं इसके अतिरिक्त न कोइ उपाय था, न है और न होगा। गुरुजी ने कहा है बस पर्याप्त है। सतीजी को तो विश्वास करने के लिए शंकर भगवान् ने एक चमत्कार भी दिखाया। चमत्कार क्या दिखाया। सतीजी ने कुछ कहा नहीं पर शंकर जी जान गए। ये चमत्कार क्यों दिखाया ताकि सतीजी को विश्वास हो जाए। अब यह भी बड़ी सार्थक बात है। गुरुदेव चमत्कार दिखाते नहीं है। प्रदर्शन – प्रियता, उनके मन में ऐसा भाव नहीं है। पर ईश्वर जो चमत्कार दिखवाते हैं उसका उद्देश्य केवल इसलिए ताकि विश्वास हो जाए कि उन्होंने यह बात जान लिया कि हमारे मन में क्या है, तो वह यह भी जानते होंगे कि राम जी कौन हैं? राजा के बेटे हैं कि परमात्मा । अच्छा मौका था विश्वास करने के लिए। पर जिन्हें विश्वास नहीं करना होता वे कभी करते ही नहीं। चाहे जितनी चेष्टा की जाएं। शंकरजी जान गए तब तो मान ले – सतीजी के मन में आया कि यह जरूरी नहीं है कि यह जानते हैं तो वह भी जानते होंगे। यह तो साधारण सी बात है। विश्वास का अवसर भी आया था पर किया नहीं।

तो पहले तो कपट, उसके बाद अविश्वास और तीसरी जो घटना घटी। शंकर जी ने कहा कि तुम्हे अधिक संदेह हो तो परीक्षा लेकर आओ। और सतीजी परीक्षा लेकर लौटी। शंकरजी ने बहुत पूछा कि परीक्षा कैसे ली ? तो कहा कि– कछु न परीक्षा लीन्ह गुंसाई। तो यह तीसरा हुआ, असत्य। पहले कपट, फिर अविश्वास और फिर असत्य। सती माता भगवान् शिव के विश्वास दिलाने पर भी विश्वास नहीं करतीं। मन में संशय है यह प्रकट भी नहीं करतीं। कपट, अविश्वास और प्रभु की परीक्षा लेने के बाद जो बात अनुभव में आई उसकी चर्चा नहीं करतीं, तो इसका परीणाम यह होता है कि सती, माता

पिता के यज्ञ में जातीं हैं और वहां अपने शरीर को नष्ट कर देतीं हैं। इस दृष्टि से माता में दोष नहीं देखना चाहिए।

सती माता है, आदिशक्ति हैं। उनमें दोष हो ही नहीं सकता। है ही नहीं । पर मैं अत्यंत नम्रता पूर्वक आपसे निवेदन करूं। इस घटना को आप इस रूप में देखें, जैसे मां छोटे से बच्चे को आंगन में चलना सिखाती है। तो स्वयं खड़ी हो जाती है और बच्चे से कहती है बेटा आओ। आगे आओ। तो बेटा आगे बढता है। बच्चा सीधा चलता है और मां उल्टा चलती है। पीछे की तरफ चलती है। क्या मां को सीधा चलना नहीं आता। आता है। पर वह तो उल्टे चलने की लीला इसलिए कर रही ताकि उसका बेटा सीधा चलना सीख जाए। जब इस तरह की लीला हो तो ऐसे ही सोचना चाहिए कि इनको तो सीधा चलना आता ही है, ये तो उल्टा चलने की लीला इसलिए कर रही हैं ताकि हमें सीधा चलना आ जाए। सती माता और भगवान् शंकर दो नहीं हैं, अर्धनारीश्वर हैं। अभिन्न हैं। सतीजी ने शरीर नष्ट कर दिया। इसका अर्थ केवल इतना ही हुआ कि सदगुरु से कपट, सदगुरु पर अविश्वास और सदगुरु से असत्य का व्यवहार करने वाले शिष्य का जीवन नष्ट हो जाता है। बस कथा का संकेत इतना ही है।

सदगुरु वैद्य, वचन विश्वासा।
संयम जहं न विषय के आसा।।
राम जैसो नाथ नहीं, भरत सो भ्रात नहीं,
सिय सी न मातु, तीन लोक कहुं भोर है
शबरी सो प्रेम नहीं, लक्ष्मण सो नेह नहीं,
हनुमत सी न सेवा, जो साधु सिरमोर है ।
भारत सो देश नहीं, राम सो राजेश नहीं,
वेद सो संदेश नहीं, सुग्रीव सो दोस्त है।
गंग सो न पानी, महादेव सो न दानी,
संत तुलसीदास की बानी सी न बानी कहुं ओर हैं
सदगुरु वैद्य वचन विश्वास। संयम जहं न विषय कै दासा ।।

संत श्री तुलसीदासजी महाराज जी का संदेश है। इस पंक्ति में भी सदगुरु को भवरोग मिटाने वाले वैद्य के रूप में निरूपित करते हैं। और इसके लिए आवश्यक शर्त यह है कि सदगुरु देव भवरोग मिटाने वाले वैद्य हैं, पर कोई भी रोगी स्वस्थ तभी होगा जब उनके वचन पर विश्वास करे। महिमा विश्वास की है। और यही संयम है। क्या? न विषय के दासा। सदगुरु वैद्य के वचन पर विश्वास करके कोई यह सोचे कि हमें विषय सुख मिलेगा। वह इस धोखें में न रहे। उसे ब्रह्म सुख की प्राप्ति होती है। इसलिए जिसे भगवान् का सुख चाहिए, जिन्हें आत्मा परमात्मा का सुख चाहिए वे सदगुरु वैद्य के वचन पर विश्वास करें।

श्रीतुलसीदास जी कहा कि बिनु विश्वास भक्ति नहीं। और हम यह भी सुनते हैं कि भक्ति के माध्यम से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

भक्ति प्रियो माधव:।।

बड़ा सुंदर भजन है पूज्य स्वामी श्री बिंदुजी महाराज का । प्रबल प्रेम के पाले पडक़र, प्रभु का नियम बदलते देखा। भगवान् भक्त के बस हैं। वृंदावन में बृजवासी गाते हैं-

कौन पावै याको पार,
प्रेम नदिया की सदा उल्टी बहे धार।
सुनो मैं सुनाऊं एक बात अनमोल,
ब्रह्म निराकार गयो गोकुल की गेल,
नंद यशोदा के द्वार
प्रेम नदिया की सदा उल्टी धार।
कौन पावै याको पार,
प्रेम नदिया की सदा उल्टी बहे धार।

यह भक्ति का चमत्कार है। निराकार साकार हो जाये। निर्गुण सगुण हो जाए। व्यापक, व्यक्ति बनकर प्रकट हो जाए। भक्ति का यह चमत्कार यदा कदा नहीं,

सदा होता है। मुझे पूज्यपाद श्री बिंदुजी की पद्य रचना का स्मरण हुआ। कि कुछ गोपियां आपस में बैठकर चर्चा कर रही हैं:-

कासों कहुं कौन सुनै मानै को काहि सही,
जैसे बृजबाला नित्य बातन बनावती।
पालन करत जौन चौदह भुवन ताहि
पल पल बीच डाल पालना झुलावती।
बिंदु विधि शंभु के ध्यान में आवै जौन
ताहि लै लै लोरन खिलौनन खिलाववतीं
कुंज मन रंजन में ढाड़ि कर कंजन
सौ अलख निरंजन के अंजन लगावती।

निरंजन के नैन में अंजन। और कौन सा निरंजन। अलख निरंजन। जो लखा न जा सके। ब्रह्मम निरंजन की अखियां मे अंजन आज लगावत देखो।

एक भक्त ने श्रीराम जी को देखा। वे मैया की गोद में हैं और मैया कौशल्या उनकी आंखों अंजन लगा रही हैं। उस भक्त ने कहा कि जिन नैनन की सैन सों सृष्टि प्रलय है जाय, उन नैन में कोशिला काजल लियो लगाय। यह प्रेमियों की बात है। प्रेम बात है। भक्ति से भगवान् मिलते हैं पर दशरथजी तो प्रेमी हैं। देखो दशरथ अयोध्यापुरी मे रहे हैं तो क्या अयोध्या के कारण भगवान मिले उन्हें । अयोध्या के कारण दशरथ जी को रामजी नहीं मिले। इसका अर्थ यह है कि तीर्थ के कारण भगवान् नही मिलते। अगर तीर्थ के कारण भगवान् मिलते तो बड़ी सहज थी भगवत प्राप्ति। सावधानी से सुनना कि यह तीर्थ का विरोध नहीं हैं। अच्छा चलो तीर्थ के कारण भगवान् नहीं मिले।

दशरथ जी ने तीन विवाह किए। और यह सांकेतिक सूत्र है कि तीन विवाह का अर्थ है तीन तरह की निष्ठाओं के साथ साधना करना। हमारे यहा वेदांत सिद्धांत हैं, कर्म, उपासना और ज्ञान। यही हैं दशरथ जी के तीन विवाह। तो एक तो दशरथ जी तीर्थ में रह रहे हैं और दूसरा स्वयं दशरथ जी दश रथ हैं। दशरथ का अर्थ यह भी है कि पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां। इन पर जिसने संयम कर लिया वही तो दशरथ हैं। और मानस की कथा ही दो दस से जुड़ी हुई हैं, एक ओर दशरथजी और दूसरी ओर दस मुख। और दस मुख कौन, जिसने दसों इन्द्रियों को भोगों के लिए आनन बना रखा हो, दसानन माने असंयम। और जिसने दसों इन्द्रियों पर संयम करके रथ बनाया हो, ये दशरथजी संयम के स्वरूप हैं। दशरथजी तीर्थ में रहते हैं। और दशरथजी ने तीन विवाह किए। अध्यात्म माता रामायण में तो स्पष्ट उल्लेख किया शक्ति स्वरूपणी कैकेयी, उपासना स्वरूपणी माता सुमित्रा और

प.पू. श्री गुरू महाराज जी के दर्शन लाभ कैसे लें...

प्रतिदिन दोपहर 12 बजे सतसंग भवन में
मंगलवार, शनिवार एवं रविवार सायं 7.30 बजे मंदिर में
प्रत्येक गुरूवार सायं 7.30 बजे समाधि स्थलपर

ज्ञान निष्ठा का स्वरूप माता कौशल्या। इसका अर्थ यह है कि संयमी साधक ने सत्संग करते हुए तीर्थ में निवास करके इन साधनाओं से अपना संबंध जोड़ा। क्योंकि अयोध्या की भूमि सत्संग भूमि है। कितनी बातें आ गईं, सत्संग, तीर्थ और साधना। पर भगवान् नहीं मिले। जीवन बीता जा रहा है, चौथापन आ गया। किसी ने भगवान् से कहा कि आपने तो दशरथजी के यहां जाने के लिए वचन दिया है और वो भी तीन बार। इनके घर नहीं जाओगे। इसको ऐसे सोचते हैं कि दशरथजी को ही नहीं हम सबको वचन दिया है कि हम तुम्हें घर में ही मिलेंगें। भगवान् स्वयं कहते हैं कि जो सांवले को सदा ढूंढता है उसे एक दिन सांवरा ढूंढता है, जिसे ढूंढने का अमल पड़ चुका है वो उसे ढूंढने में मजा ढूंढता है।

अरे, दिल जिसे कुल जहां ढूंढता है वो तुझमें, तू उसको कहां ढूंढता है। न पूछो पतित बिंदु क्या ढूंढता है, पतित बिंदुजी का वो पता ढूंढता है। भगवान् ने सबको वचन दिया है कि हम घर में ही मिलेंगे। मौकों कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में। तो मिल जाओ न महाराज हम सत्संग कर रहे हैं, संयम कर रहे हैं, प्रकट हो जाओ ना। भगवान् ने कहा कि चाहे तीर्थ करो, चाहे सत्संग करो, चाहे संयम करो हम घर में रहकर भी प्रकट तब तक नहीं होते, जब तक व्यक्ति सद्गुरु के पास नहीं जाता। कहत कबीर सुनो भई साधु, सदगुरु नाम ठिकाना है।

दूसरे पद में कबीरदासजी कहते हैं-

गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिया से मिले नैना।

कछु लेना न देना मगन रहना, गुरुचरणों में लिपटे रहना।

लेकिन अब दो तरह की बात हो गई। अब तक तो हम यह सुन रहे थे कि भगवान् प्रेम से मिलते हैं। लेकिन अब एक बात सुनने को मिली कि गुरुदेव के बिना भगवान् की प्राप्ति नहीं होती। भक्ति के बिना भगवान् नहीं मिलते। कभी कभी लगता है कि ये दो तरह की विचारधाराएं हैं। हृदय प्रधान लोग कहेंगे कि भक्ति से भगवान् की प्राप्ति होती है पर विचार प्रधान संयमी साधक कहेंगे कि सदगुरु के कारण भगवान् मिलेंगे। पर मुझे तो लगता है कि दो विचारधाराएं भिन्न भिन्न दिखते हुए भी दो नहीं है। भगवान् की प्राप्ति भक्ति से ही होती है। रामहि केवल प्रेम पियारा। सो केवल भगतन हित लागी। तो इसका क्या अर्थ है कि गुरुदेव की पूजा करो तो भगवान् मिलेंगे। अच्छा चलो भगवान् से पूछते हैं।

प्रभु आप तो कहते हैं मेरी प्राप्ति भक्ति से होती है, गुरुदेव की पूजा करो तो मेरी प्राप्ति होती है। हम थोड़ा चक्कर में पड़ गए हैं। भगवान् ने कहा- कि चक्कर में मत पड़ो हम भक्ति से ही मिलते हैं, प्रेम से ही मिलते हैं। तो फिर क्यों कह रहे हो कि गुरुदेव के पास जाओ तब हम मिलेंगे। भगवान ने कहा कि भक्ति को इतना संकीर्ण मत करो। भक्ति तो इतनीविराट है कि तुम गुरुदेव के यहां जाते हो गुरुदेव के चरणों में सिर झुकाते हो, पर गुरुदेव के चरणों में सिर झुका कर पूजा करते तो यह मेरी ही भक्ति है। भगवान, आप ऐसे ही कह रहे हो कि इसकी कोई लिखा पढ़ी भी है। समझाने के लिए ही कह रहे हो। भगवान् ने कहा कि हमारा बयान लिखित है। पूछो श्री तुलसीदासजी से। हमने स्वयं कहा।

गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमाना।

चौथी भक्ति मम गुण गन, करहिं कपट तजि गान।।

इसलिए जो गुरुदेव के चरणों की सेवा करते हैं, अभिमान रहित होकर गुरुदेव के चरणों की वंदना करते हैं वे मेरे ही भक्त हैं।

तो प्रभु, आपके भक्त हैं तो वे आपको बड़ा समझते होंगे गुरुजी से । भगवान् ने कहा कि मैं अपने साथ घटित एक घटना बता रहा हूं। मैंने सबको कहा कि ऐसे करो, ऐसे करो तो मेरे नियम से सब चलने लगे। पर एक महात्मा ऐसे हैं कि उन्होंने मुझसे कहा कि अवतार लेकर तो बाद में आना, पर मैं पहले ही लिखे दे रहा हूं कि ऐसे

करना, ऐसे करना। वे हैं महर्षि बाल्मिकी उन्होंने रामायण पहले ही लिख दी। भगवान् ने कहा कि हमारे बनाये नियम से सब चलते हैं और तो बाल्मिकीजी के बनाये नियम से हम चलते हैं। तो उन्होंने बड़ा विचित्र नियम दिया है कि राम सुनो, उन्हें मिल जाना जो,

तुम्हते अधिक गुरुहिं जिय जानी।

सकल भाय सेवहिं सनमानी।

बाल्मिकी जी ने कहा कि राम नियम यही रहना चाहिए। उनको जरूर मिलना जो तुमसे अधिक अपने गुरुजी को बड़ा समझे। कि राम तो हैं पर हमारे गुरुजी रामजी से बड़े हैं। रामजी ने कहा कि मुझसे जो गुरुजी को बड़ा मिले वह मेरा भक्त है। ऐसो कौ उदार जगमाही। रामजी जैसा कौन उदार है। गुरुजी को मुझसे बड़ा मानना तो मैं तुम्हे अपना भक्त मान लूंगा। यहां बड़ी नम्रता से मैं एक निवेदन करूं। कहना क्या चाहते हैं श्री तुलसीदासजी। गुरुजी भगवान् से बड़े हैं मानो। पर भगवान् तो हैं ना। गुरुजी बड़े किनसे होंगे? इसका अर्थ यह नहीं है कि भगवान् है ही नहीं। गुरुजी भगवान् ही नहीं गुरुजी भगवान् से भी बड़े हैं। कबीरदासजी जैसे गुरुभक्त जी भी उन गुरुजी की वंदना करते हैं जो गोविंदजी के साथ खड़े हैं

गुरु गोंविद दोऊ खड़े, काके लागू पायं।

बलिहारि गुरु आपने जिन गोविंद दियो मिलाय।।

इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि भगवान् हैं ही नहीं।

किसी संत से एक बात हमने सुनी थी। भोजन हम लोग रोज करते हैं। और भोजन बनाने वाली माताओं से पूछो कि माता क्या बनाया है। माता कहती हैं कि महाराज आज तो आलू बनाये है, तोरी बनायी हैं। अच्छा एक बात बताओ कि आलू बनाये हैं कि आलू बने बनाये हैं। कोई बना सकता है इन्हें? ये तो आलू बनाने वाले ने ही बनाये हैं लेकिन लोगों को यह भ्रम है कि हमने आलू बनाया है। सही बात तो यही है कि उन्होंने आलू का साग बनाया है। अगर उसने आलू न बनाया होता तो आलू का साग कैसे बनता। आलू पहले बना कि साग? तो साग बनाने वाले की तो महिमा है लेकिन आलू बनाने वाला भी तो होगा। उसने आलू ही न बनाया होता तो साग बनाने वाले ने क्या बनाया होता? तो हमें तो लगता है कि किसी गुरु ने पहले ऐसा चेला नहीं बनाया होगा जिसे पहले भगवान् ने न बनाया हो। तो जीवन तो पहले मिला। भगवान् ने पहले बनाया आलू। इसलिए उनको प्रणाम। पर गुरुदेव की महिमा भगवान् से अधिक क्यों?। आलू बनाने वाले से साग बनाने वाली की महिमा अधिक है। इसलिए है कि आलू जब बना तो मिट्टी से सना। कोई परवाह ही नहीं करता था। लेकिन जब देखा कि ये बना तो है और बनाने वाले ने बढिया बनाया और इसकी कोई कीमत नहीं है। एक उदार मन व्यक्ति को दया लगी। उसने मिट्टी मे सने हुए आलू को उठा लिया। अब उसने पानी से धुलाई की। सब मिट्टी दूर की। और फिर पानी में पड़ा रहने दिया । मुलायम हुआ तो छिलका उतारा और टुकड़े किए और फिर एक साफ बरतन में जल भरकर आग पे रख दिया। घी, तेल, मिर्च मसाला उचित मात्रा देकर ऐसा स्वादिष्ट साग बनाया कि जिस आलू को कोई नहीं पूछ रहा था उसे सब मांगने लगे। आलू को कोई संभाल कर नहीं रखता पर साग को सब संभाल कर रखते हैं। जब साग बना दिया गया तो स्वाद आ गया।

इसी तरह परमात्मा ने जीवन तो दिया था पर इसमें स्वाद नहीं था। जब सदगुरु ने शिष्य बनाकर ज्ञान, वैराग्य और भक्ति से भर दिया तो इसमें स्वाद आ गया। और जब स्वाद आया तो सब मांगने लगे। तो आलू बनाने वाले से साग बनाने वाली की महिमा अधिक है। इसलिए भगवान् से अधिक गुरुदेव की महिमा है पर इसका अर्थ यह नहीं है कि भगवान् नहीं है। साग बनाने वाले की महिमा तो है पर आलू बनाने वाला भी है। और भगवान् होंगे तभी तो गुरुदेव को बड़ा समझेंगे। इसलिए गुरुदेव

की पूजा अभिमान रहित होकर, उनके चरणों की सेवा करना, यह भगवान् की भक्ति है। मुझे तो लगता है कि दशरथ जी जब गुरुदेव के चरणों में गए तब उन्हें भगवान् मिले। पर शर्त यही है कि, भगवान् न तीर्थ से मिलते हैं, न संयम से मिलते हैं, न साधना से मिलते हैं भगवान् तो भक्ति से मिलते हैं और इसके अलग अलग रूप में है उसमें एक रूप यह दशरथ जी के जीवन में दिखाई दिया। इसलिए मानस में जहां यह कहा गया– तुमते अधिक गुरुजिय जानी, सकल भाय सेवहि सनमानी। ये तो लिखा है कि गुरुजी को भगवान् से बड़ा समझो लेकिन गुरुदेव से मांगे क्या ?

सब कर मांगहि एक फल रामचरण रति होय।
तिनके मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोऊ।।

सदगुरु की शरण से ही भगवान् ही मिलते हैं। दशरथ जी से गुरुजी ने कहा क्या बात है, अयोध्या नरेश वैसे तो रोज आते थे आज कुछ विशेष है। हां, महाराज आज आर्त होकर आया हूं। भगवान् नहीं मिले, ये सबसे बड़ा दुख है जीवन का। पर आप मिल गए। इसी तरह जिन्हें भगवान् मिल गए उनके

मिलने का सुख है। पर आनन्द तो तब है जब हमें मिल जाएं।

हमारे घर में प्रकट हो जाएं। गुरुजी बोले हो जाएंगे। धैर्य रखो। महाराज, और कब तक धीरज रखें? बुढ़ापा आ गया, चौथापन आ गया। वशिष्ठ जी ने कहा कि भगवान् को चार रूपों में आना पड़ेगा। धरहु धीर होईहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी/धीरज रखो चार पुत्र होंगे। गुरुजी हमें क्या करना होगा ? गुरुजी ने कहा तुम्हें कुछ नहीं करना है। तो क्या करें? गुरुजी बोले तुम एक काम करो घर में बैठो, भगवान् मिल जाएंगे। अब इस वचन पर विश्वास कौन करे। अभी तक तो सब लोग यही कहते थे कि घर छोड़ कर वन में जाओ, खोजो, साधना करो। लेकिन गुरुदेव वशिष्ठ जी ने कहा है कि यदि भगवान् को पाना है तो घर मत छोडना। घर में ही मिलेंगे। पर इस घर में माने, अपने घट में, हृदय में अंतर्मुखी भाव से बैठे रहो। जब तुम घर में ही बैठे रहो, मेरे वचन पर विश्वास करो, तुम्हे घर बैठे ही भगवान की प्राप्ति होगी।

कुंजन, कुंजन फिरै राधिका, भाब्द सुनौ गुरुजी को। बांसुरी वहां सुनाई पड़ रही है, और श्री राधिका श्रीकृष्ण को कुंजों में ढूंढ रही हैं। और श्रीकृष्ण कहां हैं।

सिंहासन पर आप विराजे, मुकुट धरे तुलसी को।
माई मोहे लोगे वृंदावन नीको।।

गुरुजी ने कहा कि घर बैठो। दशरथजी ने बात मानी। घर बैठ गए। यह है— सदगुरु वैद्य वचन विश्वासा। इसीलिए श्रृंगी ऋषि को भी वशिष्ठ ने बुलाया। ऋगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा। अब फिर वही बात आती है। तो क्या भगवान यज्ञ से मिले ? क्यों कि आदमी का मन बिना कोई कारण खोजे रहता ही नहीं। अच्छा तीर्थ से नहीं मिले तब यज्ञ से मिले होंगे। अरे नहीं, भाई । तो क्या यज्ञ बेकार है? कौन कहता है यज्ञ बेकार है। एक बात है चाहे दूध हो, चाहे दही हो। न

दूध में मिठास है, न दही में मिठास है। जिसमें चीनी गिर जायेगी उसमें मिठास आ जाएगी। इसका अर्थ यह है कि तीर्थ से भगवान् नहीं मिलते, पर तीर्थ में ही मिल जाएंगे। यज्ञ से नहीं, पर यज्ञ के कारण ही मिल जाते हैं। यह ध्यान रखें कि चाहे तीर्थ से मिले, यज्ञ से मिले, साधना से मिले। मिठास जैसे न दूध की है न दही की है मिठास तो शर्करा की है, इसी प्रकार भगवान् चाहे तीर्थ से मिले, यज्ञ से मिलें, साधना से मिले, पर भगवान् जब भी मिलेंगे भक्ति से ही मिलेंगे। इसके अलावा कोई उपाय नहीं। तीर्थ में यदि भक्ति जाग जाए तो तीर्थ में ही मिल जाएंगे।

इसीलिए यहां एक संकेत है कि यज्ञ तो किया गया, यज्ञ में विधि तो प्रमुख है ही, पर इस यज्ञ से हमें फल मिलेगा ऐसा विश्वास और विश्वास से होती है उत्पन्न भक्ति। इसलिए भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें।। देखो यज्ञ की बड़ी महिमा है। कुछ लोग बड़े विचित्र तर्क देते हैं।

एक सज्जन बोले यज्ञ करने से क्या फायदा? उनकी आदत थी हर चीज में फायदा पूछने की। उनसे कहो भजन करो, क्या फायदा? गीता पढो, क्या फायदा? सत्संग सुनो, क्या फायदा वे इसे ब्रह्मास्त्र समझते थे चाहे जहां प्रयोग कर दें। इससे क्या फायदा? कई लोग उनसे परेशान हो गए। एक ने हमसे कहा कि कोई उपाय बताओ। हमने कहा कि आप भी उन पर इसी शस्त्र प्रयोग करो। कैसे? एक दिन संयोग से वे लोग मिल गए। उन्होंने कहा कि तीर्थ करो, वे तुरंत बोले कि तीर्थ करने से क्या फायदा? मुझे पता लग गया था कि वे तंबाकू खाते थे हमने कहा आप तंबाकू खाते हो। उन्होंने कहा कि हां। हमने कहा कि क्या फायदा? अब वे कुछ बोले ही नहीं। ये तो हमने कभी सोचा ही नहीं। बोला कि आप क्या कहना चाहते हो। तो हमने कहा कि जब इतने काम बिना फायदे की सोचे करते हो, तो एक काम यह भी बिना फायदे के कर लो तो क्या बिगड़ जाएगा।

एक आदमी ने तर्क दिया कि आज दुनिया कहां जा रही है और ये लोग यज्ञ की बाते करते हैं। लोगों को भोजन नहीं मिल रहा है, गरीबी कितनी, दुख कितना और ये इतनी कीमती चीजे आग में डालते हैं। घी डालते हैं, वो भी शुद्ध और शर्करा आदि कितनी चीजे आग में डालते हैं। ये पागलपन नहीं तो और क्या है? हमने कहा कि आप कभी गांव में गए हैं। बोला हां, कई बार गए हैं। हमने कहा कि आदमी जब खेत में बीज डालता है तो देखा है आपने। कहा हां, देखा है। घर से लाता है अनाज। आपने उससे पूछा कि क्या फायदा । यदि किसी किसान को समझाओ कि क्या फायदा है तो वह मानेगा। बोले, वो क्यों मानेगा उसको अनुभव हुआ है। हमने कहा आप यह सोचो जैसे भूमि में गिरा हुआ बीच भूमि अपने पास नहीं रखती, वापिस करती है और कई गुन। बढ़ाकर वापिस करती है, यह सबका अनुभव है। तो इसी तरह ऋषियों का भी अनुभव है कि अग्नि में डाले हुए पदार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाते, अग्नि कई गुना वापिस करती है। एक बात और है। घर से लाये और डाल दिया खेत में हमने कहा कि घर मे आये कहां से? खेत में हुए ही न होते तो घर में कहां से आते। जितना घर से लाते हो उतना ही मिले तो खेत में क्यों कोई बीज डाले, तो बोले कि इस यज्ञ से क्या मिला? हमने कहा यज्ञ से चार पुत्र हुए दशरथ जी को। हां, मिले। हमने कहा कि विश्वामित्रजी के यज्ञ की रक्षा में दो बेटों को भेजा तो कितने गए? बोले, दो। और विश्वामित्र जी वहां से एक और यज्ञ में ले गए । भेजे दो और लौटे कितने? चार। तो इधर से गए विवाह किया तो कितने लौटे, आठ 7 तो दो दिए और आठ मिले यह यज्ञ का लाभ है। यज्ञ का अर्थ यही है कि उचित रीति से हम जीवनोपयोगी चीजों को प्राप्त करें देवताओं को अर्पित करें। देवताओं से हमारी कामना पूर्ति होती है। लेकिन धन्य है।

यज्ञ तो बहुत जगह हुए लेकिन अयोध्या जैसा यज्ञ कहां हुआ होगा। कहा– क्यों? अब तक जहां जहां यज्ञ हुए उस यज्ञ से भोग पदार्थों की प्राप्ति हुई, लेकिन अयोध्या में जो यज्ञ हुआ उसमें भगवान् की प्राप्ति हुई। अग्नि देव प्रकट हुए। एक बात और है। हबि का प्रसाद लेकर। अपने यहां खीर की बड़ी महिमा है। खीर नाम सुनते ही भीतर कुछ न कुछ होता है। वह पदार्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ही, पर इस खीर के द्वारा क्या संकेत देना चाहते हैं हमारे सदग्रंथ। इसकी आध्यात्मिकता की बात करें। खीर में तीन चीजें होती हैं। दूध, चावल और चीनी। और अगर विचार करें तो अपने यहां दूध को ऐसे समझो। कि दूध माने सार। सार कैसे ? कहा– इसमें अगर मिल जाये जल, तो हंस की जरूरत पड़ती हैं। हंस सार को ग्रहण करता है। जल को छोड़ देता है। जड चेतन गुन दोष मय विश्व कीन्ह करतार, संत हंस गुण गुण गण गहइ परिहरि बारि विकारि। तो हंस कौन? जो सार को ग्रहण करे और असार को छोड़ दे। और परमहंस कौन? जिसकी तो दृष्टि में भेद ही न रह जाए सार और असार का। माने दूध सार। और सार क्या है, ज्ञान। तो यह दूध माने ज्ञान – और ये चावल जो मिलाए गए ये क्या हैं? ये मानो कर्म व्यवस्था की ओर से संकेत हैं कि जो हमने बोया वह फसल के रूप में मिला। ये कर्म हैं, पर ये चावल ही क्यों? खेती तो कई चीजों की होती है। चावल सफेद होता है। सफेद पवित्र होता है। खीर में तीनो चीजें पवित्र हैं। दूध भी श्वेत, चावल भी श्वेत और चीनी भी श्वेत। इसका अर्थ है पवित्र ज्ञान और पवित्र कर्म। लेकिन भैया, कर्म कितने ही पवित्र हों ओर ज्ञान कितना ही शुद्ध हो पर चीनी न गिरे तो स्वाद नहीं आता। तो जीवन में स्वाद तो भक्ति के बिना नहीं आता। जहां भक्ति है वहीं मिठास है। तो भैया यह जो शर्करा है यही भक्ति है। और ये तीनों मिल जाएं तो खीर है। लेकिन तीनों का मिश्रण घोल हो सकता है खीर नहीं। खीर तब है जब इसे अग्नि में परिपक्व किया जाये अग्नि में तपाकर। इसका अर्थ यह हुआ कि ज्ञान, भक्ति और धर्म इन, तीनों का परिपक्व, समन्वित रूप का नाम खीर है। परिपक्व ज्ञान, परिपक्व भक्ति और परिपक्व धर्म और अग्नि ही तो पकाती है और इस खीर को। तो अग्निदेव ने स्वयं प्रकट होकर दिया।

प्रगटे अग्नि चरू कर लीन्हे।

इसका अर्थ है कि तपश्चर्या की अग्नि में तपाकर इन निष्ठाओं को परिपक्व कर लिया हो तो, यह यह खीर और इसी खीर से भगवान् से प्रकट होंगे। और इस खीर को जो अपने भीतर रखेगा तो भीतर से भगवान् प्रकट होंगे। इसलिए अग्निदेव ने कहा दशरथजी यह खीर ले जाओ। बांट दो। दशरथ जी ने कहा कि आज इच्छापूर्ति हो गई अग्निदेव आप हमारे सोचने से आ गए। अग्निदेव ने कहा कि फिर गलती कर रहे हो।

जो वसिष्ठ कछु हृदय बिचारा।
सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा।।

तुम्हारे गुरुदेव के वचन का यह चमत्कार है। तुमने गुरुवचन पर विश्वास किया। सदगुरु वैद्य, वचन विश्वासा अब यह भी देखो। गुरुदेव की कृपा से भगवान् की प्राप्ति

दशरथ जी को हुई। लेकिन भगवान् आए कब । नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ।। देखो अपने यहां ऐसे तो भगवान् के अनेक अवतार हैं। पर दो अवतारों की चर्चा बड़ी प्रमुख है।

जै मीरा के गिरधर नागर, सूरदास के श्याम।

नरसी के प्रभु साह संवरिया, तुलसीदास के राम ।।

अवध नाथ बृजनाथ आपका सदा सदा मैं दास रहूं।

जब जब आजन्मु इस जग में पद पंकज के पास रहूं ।।

हमारे राम कृष्ण आधार।

सूरदास को नाव चढयो है, कोऊ तारै पार।

हमारे राम कृष्ण आधार ।।

देखो हम लोग रामजी के भगत हैं, पर वे भी धन्य हैं जो कृष्णजी के भगत हैं। पर हमारे श्रीबिंदुजी महाराज वृंदावन में निवास करते हैं। और उनसे जब किसी ने कहा कि कीर्तन राजा राम राम राम, कथा राम जी की, निवास वृंदावन में बड़ा सुंदर पद उन्होंने कहा कि हमारा दोनो से ही नाता है।

दास रघुनाथ का नंद सुत का सखा, कुछ इधर भी रहा

कुछ उधर भी रहा।

सुख लिया श्री अवध और बृजवास का। कुछ इधर भी रहा

कुछ उधर भी रहा।

मैथिली ने कभी मोदक दिया, राधिका ने कभी गोद में ले लिया।

मात सत्कार में नित्य होकर मगन, कुछ इधर भी रहा, कुछ उधर भी रहा।

इक तरफ द्वार दिवढ़ी के दरबान हों, इक तरफ यार मोहन के दरम्यान हों,

घर रखाता हुआ, जर लुटाता, कुछ इधर भी रहा, कुछ उधर रहा।

खूब पाई प्रसादी है रघुराज की खूब झूठन मिली यार बृजराज़ की

भोग मोहन चखा, दूध माखन चखा, कुछ इधर भी रहा, कुछ उधर भी रहा ।

किसी ने कहा ये इधर उधर रहना ठीक नही । एक तरफ रहो।

उत्तर दिया ।

इस जमाने मे ऐसे बहुत लोग हैं जो न इधर के रहे न उधर के रहे।

बिंदु दोनो तरफ ले रहा है मजा कुछ इधर भी रहा, कुछ उधर रहा ।।

इसलिए

हे मुरलीधर छलिया मोहन हम भी तुमको दिल दे बैठे हैं;

गम पहले से भी कम तो न थे इक और मुसीबत ले बैठे हैं।

दिल कहता है तुम सुंदर हो लेकिन आंखे कहती हैं दिखलाओ,

तुम मिलते नहीं हो आकर के हम कैसे कहें देखो ये बैठे हैं ।।

एक दूसरी बात सुनो।

महिमा सुनके हैरान हैं हम, तुम मिल जाओ तो चैन मिले।

मन खोज भी तुम्हे पाता नहीं, तुम हो कि उसी मन में बैठे।

पर सही यह बात यह है –

राजेश्वर राजा राम तुम्हीं प्रभु योगेश्वर घनश्याम तुम्हीं।

धनुधारी बने कभी मुरली बजा युमना तट निर्जन वन मे बैठे हैं।

इसलिए हमारे राम कृष्ण आधार । एक संत ने कहा–

समय समय पर होत है, समय समय की बात,

किसी समय का

दिन बड़ा किसी समय की रात।

दूसरे संत ने कहा–

समय समय पर होत है, समय समय की बात, राम जन्म का दिन बड़ा, कृष्ण जन्म की रात । दिन रात हम लोग तो भगवान् से जोड़ें। और देखो, अगर यह कह दे – जब जानकी नाथ सहाय है, तब कौन विकार करे। अगर यह कह दें जब जानकीनाथ सहाय करें तो यह भी कहते हैं–

ये जीवन है तेरे हवाले मुरलियावाले ।
अपने चरण का दास बना के,
वृदांवन में बसा ले मुरलियावाले ।।
मेरे अपने हुए न अपने,
अब तो तूही अपना ले मुरलियावाले ।
हम कठपुतली तेरे हाथ की,
जैसे भी चाहे नचा ले मुरलियावाले ।
जन राजेश की अर्ज यही है
दर्द है कंठ लगा ले मुरलियावाले ।
जीवन है तेरे हवाले मुरलियावाले ।।

भगवान् श्रीराम आये दिन में और भगवान् श्रीकृष्ण आये रात में। एक विनोद की बात बताऊं। मैं ठहरा रामजी का भगत। एक आये, उन्होंने ऐसे ही कहा कि रामजी तो दिन में आए हमारे भगवान् श्रीकृष्ण तो रात में आए। हमने कहा कि हमारे तुम्हारे भगवान् थोड़े ही अलग हैं। लेकिन विनोद की बात थी। हम बोले अरे वो तो रात में ही आएंगे। क्या चोर तो दिन में आते हैं? आप श्रीकृष्ण को चोर बताते हो। उनको कोई नहीं पकड़ पाया। पहरेदार सो गए। हम बोले– ऐसा चोर ही कैसा जिसे कोई पकड़ ले। किस तरह के चोर हैं लेकिन – श्रीराधिकाया हृदयस्य चौरम, अनेक जन्मार्जितपापचौरम, चौराग्रगन्ण्यम् पुरुषम नमामि।

भगवान् तो ऐसे चितचोर हैं। माखन चोर हैं। नरसीजी को भगवान् बहुत मानते हैं। गुजरात की भूमि धन्य हुई जिनके कारण। एक दिन भगवान् ने नरसीजी ने कहा कि प्रभु आपकी बड़ी कृपा है। भगवान् ने कहा कि कृपा तो आपकी है । हमारी क्या कृपा। भगवान् ने कहा कि सारी दुनिया ने हमें चोर कहा, माखन चोर, चीर चोर, चित चोर लेकिन धन्य हो नरसी तुमने चोर को साह बना दिया। सांवलसाह तुमने ही कहा। भगवान् तो बड़े अद्भुत हैं। लेकिन यह विनोद की बात है। भगवान् श्रीकृष्ण रात्रि में आए और रात्रि में आना ही उनकी करुणा का सूचक है। रात्रि माने ऐसा अंधेरा जब अपना हाथ ही अपने को न दिखाई दे रहा हो। जब निराशा का ऐसा घोर अंधकार छा जाये जब कोई सहारा न दिखाई देता हो, उस कारागार में भी करुणागार श्रीकृष्ण प्रकट हो जाते हैं। जब तुम्हारे साथ कोई नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूं। एक बात और है। आये रात्रि में और बोले हमें बाहर भेजो। वसुदेवजी बोले हम जा पायें तब तो भेजें। ये हाथों में हथकड़ी, पावं में बेडी। कन्हैया बड़ा अद्भुत हैं बोले इन सब की तरफ देखो ही नहीं। तुम तो हमें अपने सिर पर बिठा लो, अगर सारे बंधन न टूट जाएं तो कहना। हमें शिरोधार्य कर लोगे तो बंधन से मुक्त हो जाओगे। तभी तो बृज में लोग कहते हैं— सोय गये अति पहरे वाले याके आपहि खुल गए तारे, या कारी कामरी वाले के। गजब कर डारे री या कार कामरी वाले ने। मथुरा में याने जन्म लियो है, गोकुल बजत नगाड़े। वसुदेव जी आगे गए तो यमुनाजी बढने़ लगी। अब जमुना बढ रही हैं और वसुदेव जी भी बढ़ रहे हैं। जल स्तर बढ़ता जा रहा है और आप भी बढ़ते जा रहे हो। इतनी तेज धारा में तो आप डूब जाओगे। वसुदेव जी ने कहा हम सामने प्रतिकूल धारा का ध्यान नहीं कर रहे हैं हम तो उसका ध्यान कर रहे हैं जिन्हें सिर पर बिठा रखा है। जीवन में कैसी भी प्रतिकूलता की धारा बहे, जीवन को डुबा देने वाली धारा बहे, परवाह न करें। जिन भगवान को सिर पर बिठा रखा है उनका

चिंतन करें। और यमुनाजी ने भी क्या किया? भगवान् के चरणों को छूआ और रास्ता दे दिया। और कितना बढयिा संकेत हैं कि इन प्रतिकूलताओं को भगवान के चरणों में डाल दो रास्ता अपने आप मिल जायेगा। याके यमुना चरण पखारे री, या काली कामरि वाले ने। गजब कर डारे री / अब एक अद्भुत बात। वसुदेव जी ने यशोदाजी के पास कन्हैया को सुलाया । और भगवान् की माया का जन्म हुआ था। एक रात में दो दो जन्म हुए। एक गोकुल में एक मथुरा में। और। वसुदेवजी ने भगवान् की माया को सिर पर बिठा लिया और भगवान् को यशोदा जी के पास सुला दिया । भगवान् रोने लगे। भगवान् को रोना क्यों आया ? दो कारण । एक तो यह कि वसुदेव जी ने भगवान् को सिर से नीचे उतारा और भगवान् की माया को सिर पर रख लिया । जब कोई भगवान् को सिर से उतार कर नीचे रख देता है और भगवान् की माया को सिर पर रख लेता है तो भगवान् को रोना आ जाता है। क्यों? कहा भगवान् को सिर पर रखा तो सब बंधन कट गए। हथकडयिां खुल गई, बंदीगृह सब खुल गए। और भगवान् की माया को सिर पर रखा तो फिर वहीं आ गए वही बेड़ी, वही फाटक। वही बंदीगृह। भगवान् के पास दो शक्तियां हैं। बोले तुम्हे क्या चाहिए। एक शक्ति का नाम माया और एक का नाम भक्ति। पहले दोनो का अंतर बताओ प्रभु। सीधी सी बात है अगर तुम्हे नाचना होतो हमारी माया ले जाओ और हमें नचाना हो तो हमारी भक्ति ले जाओ। तुम्हे बंधन में पडऩा हो तो हमारी माया ले जाओ और हमे बंधन में बांधना हो तो हमारी भक्ति ले जा जाओ। एक बात है भगवान् की माया के कारण हम सब नाच रहे हैं। सूरदासजी लिखते हैं-

अब मैं नाचयो बहुत गुपाल।

काम क्रोध को बपहिर चालना कंठ विषय की माला।

नाचयो बहुत गुपाल।

तुलसीदासजी कहते हैं-

कि नाचते ही निस दिवस मरयो। दिन रात नाचते नाचते परेशान हूं / एक बात और है नाचने वाला थकता है कि देखने वाला। देखने वाला तो कहता है और नाच। हम सब नाच रहे हैं और भगवान् देख रहे हैं। भगवान् की माया नचा रही है। हम जाते हैं संत के पास, सदगुरु के पास। रोग क्या है। नाचने का रोग है। क्या चाहते हो। हम भी थोड़ा आराम से बैठना चाहते हैं। बहुत जन्म हो गये। कोई ऐसी जगह है जहां हम आराम से बैठें। गुरुजी बोले ऐसी जगह बैठो जहां किसी और का नाच हो रहा हो। अभी तुम वहां जाते हो जहां तुम्हारा नाच होता है। अब ऐसी जगह जाओ जहां कोई और नाच रहा हो और तुम आराम से बैठो। क्या कोई ऐसी जगह है। हां, है। वृंदावन चले जाओ। तुम्हारा नाचना बंद उसका शुरु। वृंदावन में, गोकुल मे। नाचे नंदलाल नचावै हरि की मैया / वृंदावन में भगवान् नाच रहे हैं। रासलीला हो रही है, वृंदावन में बहार आई है। किसी ने कहा कि वृंदावन के राजा होकर नाचते हो? भगवान् ने कहा कि हम तो हैं।

वृंदावन के राजा हैं ही नहीं, हम तो द्वारिका के राजा द्वारिकाधीश हैं। वृंदावन में तो श्रीराधाजी का राज है। राधिकाजी की भक्ति हैं- बस यही अंतर है। माया के राज में सारा संसार नाचता है, भक्ति के राज मे भगवान् नाचते हैं। वृंदावन में बड़ा आराम है। भगवान् का नाच देखो और आराम से बैठो। लेकिन रामजी के भगत बोले हम लोग कहां जाए। श्रीतुलसीदासजी बोले- तुम अयोध्या चलो । वहां भी आराम हैं। वहां भी नाच रहे हैं। कौन ? राम जी।

रूप रासि नृप अजिर बिहारी, नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी / अगर गोकुल में नाचे नंदलाल नचावै हरि की मैया ठुमुक ठुमुक पद धरै कन्हैया।

तो अयोध्या में ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत

पैजनिया। किलकि किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय । धाय माय गोद लेत, दशरथ कनइयां ।

भक्ति के राज में भगवान् नाच रहे हैं। जो भगवान् का नाच देखना चाहें तो भक्ति के राज में रहें और यदि खुद नाचना हो तो माया के राज में रहे। एक अद्भुत बात है। जो जिससे पैदा होगा वही उसको नचाएगा। भगवान् भक्ति से प्रकट होते हैं इसलिए भक्ति उन्हें नचाती है और ये जीवभाव तो माया से पैदा हुआ है इसलिए माया इसे नचाती है । मा माने नहीं और या माने जो जो है नहीं फिर भी जैसा जिसके प्रभाव से दिखाई दे। तो यह जीवन तबते हरि ते बिलखानो जबते देह गेह निज जानो। अब मैं आपसे चर्चा कर रहा था कि भगवान् श्रीकृष्ण आये रात्रि में और भगवान् राम आए दिन में। लेकिन दोनों मध्य में आए। ये मध्य में ही ब्रह्म की स्थिति है। एक महात्मा बड़ी सुंदर बात कहते थे। जब उनसे किसी ने कहा कि महाराज आप कुछ उपदेश करें । महात्मा बोले कि एक विचार पूरा होने के बाद जब दूसरा विचार शुरू होता होगा, तो उन। दोनो विचारों के मध्य में कुछ जगह तो रहती होगी। हां महाराज रहती है तो? उस समय आप कहां रहते हैं? उस समय आप क्या होकर रहते हैं? कहा- कि यह तो मैंने सोचा ही नहीं ? महात्मा बोले- सोचना। महात्मा बोले जब एक विचार पूरा हुआ और दूसरा विचार शुरू हुआ तो उसके मध्य में आप जिस रूप में रहते हैं बस वही ब्रह्म रूप है। वहां कोई आकार नहीं। वह निर्विकार है। भगवान बिल्कुल मध्य में। अच्छा इसलिए भी मध्य में हैं कि भगवान् न इधर न उधर, मध्य में हैं। मध्य दिवस अति सीत न घामा। न सीत न धूप / मध्य माने समत्व का भाव। अति नहीं। भगवान् तो सभी अतियों से मुक्त हैं। भगवान् श्रीकृष्ण मध्य रात्रि में प्रकट हुए। भगवान् श्रीराम मध्य दिवस में प्रकट हुए। लेकिन एक अंतर है। भगवान् राम आए नवमी को भगवान् कृष्ण आए अष्टमी। नवमी का एक रस है। नौ एकम नौ, नौ दूने अठारह। आठ और एक नौ। नौ तीये सत्ताइस। तो दो और सात, नौ । नौ चौक छत्तीस, तो तीन और छै = नौ । नौ पंजे पैंतालिस तो चार और पांच, नौ। नौ छिके चौवन, तो पांच और चार, नौ। नौ सत्ते तिरेसठ तो छ्ः और तीन, नौ । नौ अट्ठे बहात्तर तो सात और दो, नौ। नौ नीम इक्यासी तो आठ और एक नौ । नौ धांई नब्बे तो बच गया नौ। एक रस है। तो रामजी एक रस दिखाई देंगे। सदा एक रस। सीधी लकीर। और उसके बाद तो आठ का अंक ही ऐसा है। आठ एकम आठ। आठ दूनी सौलह । छै और एक सात । तो उतरना शुरू हुआ। आठ तीये चौबीस, चार दो छै। आठ चौके बत्तीस तीन और दो पांच। आठ पजें चालिस रह गए चार। इतने में ही हाफ हो गये आठ से चार। लेकिन बढ़ते भी हैं। आठ छिंग अड़तालिस। आठ चार बारह। दो और एक तीन। आठ सत्ते छप्पन। पांच और छै ग्यारह। एक रह गया। आठ अट्ठे चौंसठ, तो फिर छै चार दस। आठ निम बहात्तर तो नौ ही रह गए। तो यह आठ शुरू में आठ और अंत में आठ इसका अर्थ क्या है। भगवान् श्रीकृष्ण अपने जीवन से यह संदेश देते हैं कि हम में कितने ही उतार चढ़ाव दिखाई दें पर हम जो आदि में हैं वही अंत में, बीच में तो भ्रम होता है उतार चढाव का। यह भी एक रस। बस इनकी लीला उतार चढ़ाव की है। अब यहां

आनंद हो रहा है गोकुल में और यहां आनंद हो रहा है अयोध्या में एक बात है भगवान् राम प्रकट हुए, रामजी के संग भरतजी, लक्ष्मणजी, शत्रुघ्नजी। अब अयोध्या में आनंद ही आनंद व्याप्त है। बहुत वो आप सुनते हैं ना भजन। हमारे परमआत्मीय परमप्रसिद्ध भावपूर्ण शैली में भजन प्रस्तुत करने वाले भैयाश्री विनोदजी कहते हैं ना। आनंद ही आनंद बरस रहा बलिहारी ऐसे सदगुरु की। तो ये अयोध्या में आनंद ही आनंद बरस रहा है। पर किसकी वजह से।

अवध में आज बड़े आनंद,

भाई सहित भवन भूपति के प्रगटे रघुकुलनंद
अवध में आज बड़ो आनंद ।।
नवमी तिथि मधुमास पवन बहे,
शीतल सुरभित मंद ।
मध्य दिवस विश्राम गान में आये आनन कंद ।

पर यह आनंद किसके कारण है। जन राजेश गुरुदेव कृपासों मिटे भूख दुख द्वंद। गुरुदेव के वचन पर विश्वास किया। परमात्मा प्रकट हो गये। संकेत यह है कि जो गुरुदेव के वचन पर विश्वास करते हैं उन्हें भगवान् तक नहीं पहुंचना पड़ता परमात्मा उन तक पहुंचता है। दशरथ जी भगवान् के पास नहीं गए, भगवान् जी उनके पास आए। लेकिन एक बात और। गुरुजी के वचन पर विश्वास करते रहे, लेकिन एक दिन भूल हो गई विश्वामित्रजी आए। हमें ये दो पुत्र दे दो। यज्ञ रक्षा के लिए । दशरथ जी बोले चाहे कुछ कहो महाराज, राम देत नहिं बनइ गोसांई। रामजी को देते नहीं बनता । और कुछ मांग लो। क्या दोगे? दशरथ ने कहा–

ज्ञानी वर ध्यानी वर महामान्य मानि वर,
सोचि के सयानी बुद्धि काढिये कलामको,
नाहि न निकारी हों जो अंश रघुवंशिन को,
हुकुम न टारि हौं गुलाम बिन दाम को ।
बिंदु कवि वारितक बाघ बनवास लीजे,
सकल सुपास लीजे आपहि के काम को ग्राम लीजे,
धाम लीजे धन और धाम लीजे,
काढ़ लीजे चाम पर न नाम लीजे राम।।
रामदेत नहीं बनहि गुसांइ।

विश्वामित्र जी मन में तो बड़े प्रसन्न हुए कि प्रेम ऐसा ही होना चाहिए। पर काम न बिगड़ जाए। इसलिए, हृदयं हरष माना मुनि ग्यानी। दशरथ जी ने स्पष्ट कह दिया कि रामजी को देते नहीं बनता। हमारी आपकी बने तो बने और नहीं बने तो नहीं बने। आप नाराज हो चाहे प्रसन्न। हम इनको तो नहीं दे सकते। और इनके बदले में

गावो विश्वस्य मातरः
गौ समस्त विश्व की मां है।
गौ की सेवा से अनेक तीर्थों का पुण्य फल प्राप्त होता है।

श्री सिद्धदाता आश्रम की गौशाला में सैकड़ों गौएं रहती हैं। यहां अनेक सेवादार गौसेवा कर पुण्य प्राप्त कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति प्रतिदिन चारा आदि का दान करते हैं। आप भी इस पुण्य के भागी बन सकते हैं। यथायोग्य सेवा, चारा, दवाईयां आदि की सेवा आप भी कर सकते हैं। आइये! इस पुण्य कार्य में सहयोग करें।

श्री नारायण गौशाला
फरीदाबाद (हरि.) भारत
संपर्क- राजेंद्र छंगा जी
8860825054

जो चाहो दे सकते हैं। ये तो नहीं कहा कि सोच रहे हैं, कोशिश करते हैं। कुछ लोग बहाने बनाते हैं।

एक आदमी तो और गजब का था। उसके पास एक आदमी गया। दोनो पड़ौसी थे। उनके पास दो गधे थे। वो मिट्टी ढोने का काम करते थे। उसके पास गया बोला भाई, हमारा गधा बीमार है, अपना दे दो, मिट्टी ढोने का काम करते ही वापिस कर देंगे। गधा भीतर बंधा था। पर वह देना नहीं चाहता था ।

साफ झूठ बोल गया। हमारा गधा तो सुबह से जंगल में पता नहीं कहां गया है। और आपको तो हम मना कर ही नहीं कर सकते। उसने मान लिया कि गया होगा जंगल में। पर दैवयोग देखो, गधा ही भीतर से बोला । उसने जो बोलना शुरू किया तो वो चौंक कर खड़ा हो गया। वह बोला कि आप तो कह रहे थे जंगल गया है? तो भी उस आदमी ने गलती नहीं मानी बोला, क्या जमाना आ गया है आदमी की बात पर विश्वास नहीं है और धे पर इतना भरोसा। इसका क्या मतलब। इतनी भी हिम्मत नहीं कि साफ कह दें कि हम नहीं दे सकते। पर दशरथ जी ऐसा नहीं करते कि आप आज रूकों हम विचार करते हैं। उन्होंने कहा कि राम देत नहीं बनै गुसांइ। क्यो नहीं? अतिसुकुमार जुगल मेरे। मना कर दिया। विश्वामित्रजी समझ गए कि अब काम नहीं बनेगा। हम नाराज होकर क्या करेंगे। श्राप दे चाहें कुछ करें। जिसे नहीं देना तो नहीं देना। और वशिष्ठजी ने देखा कि काम बिगड़ रहा है। तब वशिष्ठ बहु विधि समझावा। वशिष्ठ जी ने समझाया। नृप संदेह नास कह पावा। दशरथ जी का संदेह दूर हुआ। गुरुदेव जी ने कहा राम लक्ष्मण को दे दो। एक

बार भी दशरथ जी ने मना नहीं किया।

एक सज्जन अपने गुरुजी के पास बैठे थे। तो कोई तीसरा आदमी उनको डांटने लगा कि आपकी गलती है। वो बोले कि नहीं ऐसा नहीं है। गुरुजीने कहा कि आप

विश्वामित्रजी समझ गए कि अब काम नहीं बनेगा। हम नाराज होकर क्या करेंगे।

चुप रहो। तो आज कल की भाषा प्रयोग करते हुए बोले नहीं सर। गुरुजी बोले सर और नहीं, एक साथ। वचन पर विचार। इसलिए बड़ी अच्छी बात कही है कि सदगुरु के वचन पर विचार नहीं विश्वास। गुरुजी के कहने के बाद एक बार भी दशरथ जी ने एक बार भी नहीं कहा कि कुछ गड़बड़ी हो सकती है। गुरुजी ने कहा अवश्य इनका कल्याण होगा। गुरुदेव जब आप कह रहे हैं तो विचार क्या करना। दोनों पुत्रों को ह्रदय से लगाया और दोनो पुत्रों के विश्वामित्रजी के हाथ में दे दिए । किसलिए? सदगुरु वैद्य वचन विस्वासा। और लाभ क्या हुआ। गुरुदेव के वचन पर विश्वास किया कि दो को भेजा और आठ लौटे। और यही कारण है कि जब जनकपुर से समाचार मिला कि अब आ जाओ। तो गुरुजी के पास गए दशरथजी। आप आओ चलना है। ठीक है रथ पर विराजो। दशरथजी ने कहा कि पहले आप बैठो। बोले मैं तो उसी रथ पर बैठकर चलता हूं जिस पर आप विराजमान हो जायें। बस वही आपका संकल्प ही मेरा संकल्प है। मेरा अपना कोई संकल्प नहीं। ये रथ क्या है? ये मनोरथ ही रथ है। मेरे मनोरथ पर तो आप आसीन रहें, जो आप कहें वही ठीक है। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं सोचता । जो ऐसे वचन पर विश्वास करे, उसके जीवन में देखो भगवान् आ गए। और दुबारा वचन पर विश्वास किया तो श्रीजानकी जी आ गई। भक्ति आ गई, शांति आ गई। समृद्धि आ गई। तो सदगुरु के वचन पर जो विश्वास करेगा उसे भगवान् मिलेंगे, शांति मिलेगी, भक्ति मिलेगी, समृद्धि मिलेगी। इसलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि–

सदगुरु वैद्य विश्वासा, संयम जहं न विषय कै आसा।

पंचांग

कलियुग वर्ष ५१२४, विक्रम संवत २०७९, श्री शालिवाहन संवत १९४४, राक्षस नामक संवत्सर, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु (समय घंटे/मिनट में हैं तथा सूर्यास्त के अतिरिक्त दो. १२ उपरांत के समय १३, १४... इस प्रकार हैं।)

अगस्त	श्रावण–भाद्रपद	तक	नक्षत्र	तक	योग	तक	करण	तक	चंद्र राशि प्रवेश		सूर्योदय	सूर्यास्त
१ सोम	शु.प. ४	२९.१४	पूर्वा	१६.०६	परिघ	१९.०३	वणिज	१६.४९	कन्या	२२.२९ उ.	५.२६	६.४२
२ मंगल	शु.प. ५	अहोरात्र	उत्तरा	१७.२९	शिव	१८.३६	बव	१७.३२	कन्या		५.२७	६.४२
३ बुध	शु.प. ५	०५.४२	हस्त	१८.२४	सिद्ध	१७.४८	कौलव	१७.४६	कन्या		५.२७	६.४१
४ गुरु	शु.प. ६	०५.४१	चित्रा	१८.४८	साध्य	१६.३३	गरज	१७.२८	तुला	०६.४० उ.	५.२८	६.४०
	शु.प. ७	२९.०७										
५ शुक्र	शु.प. ८	२७.५७	स्वाती	१८.३७	शुभ	१४.५२	विष्टि	१६.३७	तुला		५.२८	६.४०
६ शनि	शु.प. ९	२६.११	विशाखा	१७.५१	शुक्ल	१२.४१	बालव	१५.०९	वृश्चिक	१२.०६ उ.	५.२९	६.३९
७ रवि	शु.प. १०	२३.५१	अनुराधा	१६.३०	ब्रह्मा	१०.०२	तैतिल	१३.०६	वृश्चिक		५.२९	६.३८
८ सोम	शु.प. ११	२१.०१	ज्येष्ठा	१४.३७	ऐंद्र	०६.५५	वणिज	१०.३०	धनु	१४.३७ उ.	५.३०	६.३८
					वैधृति	२७.२४						
९ मंगल	शु.प. १२	१७.४७	मूल	१२.१८	विष्कंभ	२३.३५	बव	०७.२६	धनु		५.३०	६.३७
							कौलव	२८.०३				
१० बुध	शु.प. १३	१४.१६	पू.षा.	०९.४०	प्रीति	१९.३५	गरज	२४.२८	मकर	१४.५८ उ.	५.३०	६.३६
११ गुरु	शु.प. १४	१०.३९	उ.षा.	०६.५३	आयुष्मान	१५.३१	विष्टि	२०.५१	मकर		५.३१	६.३५
			श्रवण	२८.०८								
१२ शुक्र	पूर्णिमा	०७.०६	धनिष्ठा	२५.३६	सौभाग्य	११.३३	बालव	१७.२४	कुंभ	१४.४९ उ.	५.३१	६.३५
	कृ.प. १	२७.४७										
१३ शनि	कृ.प. २	२४.५४	शतभिषा	२३.२८	शोभन	०७.४९	तैतिल	१४.१७	कुंभ		५.३२	६.३४
					अतिगंड	२८.२८						
१४ रवि	कृ.प. ३	२२.३६	पू.भा.	२१.५६	सुकर्मा	२५.३७	वणिज	११.४०	मीन	१६.१५ उ.	५.३२	६.३३
१५ सोम	कृ.प. ४	२१.०२	उ.भा.	२१.०७	धृति	२३.२३	बव	०९.४३	मीन		५.३३	६.३२
१६ मंगल	कृ.प. ५	२०.१८	रेवती	२१.०७	शूल	२१.४९	कौलव	०८.३४	मेष	२१.०७ उ.	५.३३	६.३१
१७ बुध	कृ.प. ६	२०.२५	अश्विनी	२१.५७	गंड	२०.५६	गरज	०८.१५	मेष		५.३४	६.३०
१८ गुरु	कृ.प. ७	२१.२२	भरणी	२३.३५	वृद्धि	२०.४१	विष्टि	०८.४८	मेष		५.३४	६.३०
१९ शुक्र	कृ.प. ८	२३.००	कृत्तिका	२५.५३	ध्रुव	२०.५९	बालव	१०.०६	वृषभ	०६.०६ उ.	५.३४	६.२९
२० शनि	कृ.प. ९	२५.०९	रोहिणी	२८.४०	व्याघात	२१.४१	तैतिल	१२.०२	वृषभ		५.३५	६.२८
२१ रवि	कृ.प. १०	२७.३६	मृग	अहोरात्र	हर्षण	२२.३८	वणिज	१४.२२	मिथुन	१८.०९ उ.	५.३५	६.२७
२२ सोम	कृ.प. ११	अहोरात्र	मृग	०७.४१	वज्र	२३.४०	बव	१६.५२	मिथुन		५.३६	६.२६
२३ मंगल	कृ.प. ११	०६.०८	आर्द्रा	१०.४४	सिद्धि	२४.३७	कौलव	१९.२१	मिथुन		५.३६	६.२५
२४ बुध	कृ.प. १२	०८.३१	पुनर्वसु	१३.३९	व्यतिपात	२५.२४	गरज	२१.३७	कर्क	०६.५६ उ.	५.३६	६.२४
२५ गुरु	कृ.प. १३	१०.३८	पुष्य	१६.१६	वरीयान	२५.५६	विष्टि	२३.३४	कर्क		५.३७	६.२३
२६ शुक्र	कृ.प. १४	१२.२५	श्लेषा	१८.३३	परिघ	२६.११	चतुष्पाद	२५.०९	सिंह	१८.३३ उ.	५.३७	६.२२
२७ शनि	अमावस्या	१३.४७	मघा	२०.२६	शिव	२६.०६	किंस्तुघ्न	२६.१९	सिंह		५.३८	६.२१
२८ रवि	शु.प. १	१४.४६	पूर्वा	२१.५६	सिद्ध	२५.४३	बालव	२७.०६	कन्या	२८.१५ उ.	५.३८	६.२०
२९ सोम	शु.प. २	१५.२१	उत्तरा	२३.०४	साध्य	२५.०३	तैतिल	२७.३०	कन्या		५.३९	६.१९
३० मंगल	शु.प. ३	१५.३४	हस्त	२३.४९	शुभ	२४.०४	वणिज	२७.३१	कन्या		५.३९	६.१८
३१ बुध	शु.प. ४	१५.२३	चित्रा	२४.१२	शुक्ल	२२.४७	बव	२७.०९	तुला	१२.०४ उ.	५.३९	६.१७

रामभक्त की कहानी

महाकवि मोरोपंत का किस्सा सुनिए

मोरोपंत का जीवन अलौकिक घटनाओं और चमत्कारों परिपूर्ण था। उनके उपास्य भगवान श्रीराम थे।

महाकवि मोरोपंत का जन्म शाके में पन्हालगढ़ में हुआ था। वे पराड़कर ब्राह्मण थे, उनके मूलरूप सोनोपंत थे, मोरोपंत की माता का नाम लक्ष्मीबाई था, माता-पिता के आचार और विचार धार्मिक भावना का मोरोपंत के चरित्र-विकास पर प्रभाव पड़ा था। उनका बाल्यावस्था से ही रामभक्ति और काव्य ज्ञान में अनुराग था। शास्त्र, साहित्य और काव्य-ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने में उनकी विशेष रूची थी। जिस किसी भी ग्रन्थ में भगवान की लीला-कथा मिल जाती, उसे वे अपना प्राणधन समझते थे। उनका गृहस्थ जीवन परम सुखमय और सरस था। मोरोपंत की स्त्री रमाबाई अत्यन्त सती-साध्वी, सुशीला और सद्गुण-सम्पन्न थी।

मोरोपंत ने अखंड रूप से ईशवर उपासना की। भगवत महिमा से अपने काव्य-साहित्य की श्री वृद्धि की।

मोरोपंत का जीवन अलौकिक घटनाओं और चमत्कारों परिपूर्ण था। उनके उपास्य भगवान श्रीराम थे। पहले वे शालग्राम की पूजा करते थे। अहमदनगर में एक रामभक्त महात्मा थे। उनके पास राम की मूर्ति थी। भगवान श्रीराम ने उन्हें रात में सपने में आदेश दिया कि मूर्ति की पूजा के अधिकारी बारामती-निवासी परम भक्त मोरोपंत हैं, उनके पास मूर्ति पहुंचा दी जाए।

शाके चैत की रामनवमी को उन्होंने जाकर श्रीराम का जन्मोत्सव किया। एकादशी को उन्हें ज्वर आया, धीरे-धीरे बढ़ने लगा। पंत के प्रेमीजन तथा परिवार के लोग एकत्र हो गये। मंगलवार था, चैत्री पूर्णिमा के शुभ अवसर पर मरणासन्न पंत ने अत्यंत हृदय-द्रावक काव्य भाषा में गोमाता, भूमाता, तुलसी, गंगा माता और राम-नाम तथा आप्त और भक्तजनों का स्मरण किया। बस कुछ ही समय में उनके प्राण देह से बाहर हो गये। उनका मरण तत्कालीन मराठी सोहत्य के सौभाग्य-सूर्य के लिए कलंक बनकर आया। जनता की ओर से उनके भक्त पाण्डुरंग नाइक ने एक विशाल राम-मंदिर का निर्माण उनके शुभ स्मरण के प्रतीक स्वरूप कराया। मोरोपंत अपने समय की बहुत बड़ी काव्य-शक्ति थे, भक्ति के प्रचारक थे, श्रीराम के महान भक्त थे।

मक्का के फायदे जानिए

मक्का के दाने सेहत के लिए बहुत ही लाभकारी होते हैं। बरसात के मौसम में भुट्टे आसानी से बाजार में मिल जाते हैं। इन दिनों व्यक्ति को रोज एक भुट्टे का सेवन अवश्य करना चाहिए। आपको बता दें कि मक्का के दाने खाने में जितने स्वादिष्ट लगते हैं, उतने ही यह शरीर के लिए फायदेमंद होते हैं।

मक्का प्रकृति से मधुर, ठंडा, रूखा, खाकर मन संतुष्ट करने वाला, मूत्र बढ़ाने वाला, पोषक, शक्ति बढ़ाने वाला, खाने की इच्छा बढ़ाने वाला, बलवर्धक, कफ और पित्त कम करने वाला होता है।

कच्चा मक्का पुष्टिकारक तथा रुचिकारक होता है। मक्का हृदय की पेशियों को उत्तेजित करता है, रक्तचाप बढ़ाता है, मूत्र संबंधी बीमारियों में औषधियों की तरह काम करता है एवं पाचन तंत्र को बेहतर करता है।

आयुर्वेद में भुट्टे या मक्के के कुछ प्रमुख फायदे हम आपको यहां बता रहे हैं।

-बदलते मौसम के कारण खांसी से परेशान है और कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है तो भुट्टे से इसका इलाज किया जा सकता है। भुने मक्के का सेवन करने से खांसी से राहत मिलती है।

-लीवर की बीमारी होने पर लीवर को स्वस्थ करने में मक्का बहुत काम आता है। इसका सेवन इस तरह से करने पर फायदा मिलता है। मक्के की वर्तिका (बत्ती) को पीसकर सेवन करने से यकृत् तथा पाचन संबंधी बीमारी में लाभ होता है।

-आजकल के प्रदूषित खान-पान के कारण किडनी में पथरी होने का खतरा दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। मक्के की भस्म (65 मिग्रा) को (1 गिलास) जल में घोलकर सेवन करने से वृक्क (किडनी) एवं मूत्राशयगत अश्मरी (पथरी)में लाभ होता है।

-टी.बी के कष्ट से राहत दिलाने में मक्का बहुत काम करता है। मक्कों के दानों से बने विविध प्रकार के भक्ष्य का सेवन करने से टी.बी. (राजयक्ष्मा) व रात को बिस्तर पर पेशाब करने की बीमारी में लाभ होता है।

-अगर लंबे बीमारी के कारण या पौष्टिकता की कमी के वजह से कमजोरी महसूस हो रही है तो मक्का का इस तरह से सेवन करने पर लाभ मिलता है। मक्के को भूनकर या मक्के के विभिन्न भक्ष्य बनाकर सेवन करने से कमजोरी दूर होने के साथ-साथ तथा शरीर पुष्ट होता है।

वास्तु सरल भाषा में

आचार्य ऋषि सिंह

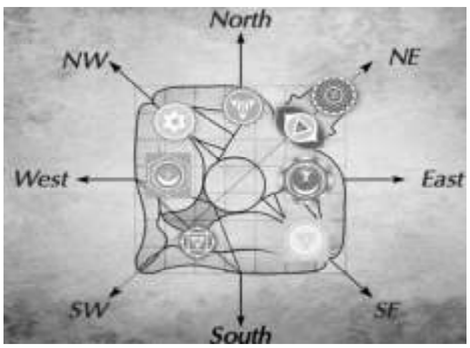

सुख-समृद्धि की चाहत किसे नहीं होती। हम सभी अपने जीवन को सुखद बनाने के लिए तरह-तरह के प्रयास करते रहते हैं। इसके बावजूद कई बार ऐसा होता है कि हमारे काम नहीं बनते और हम तनाव में आ जाते है, जिस कारण घर में अशांति पैदा हो सकती है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनमें घर में वास्तुदोष भी एक कारण हो सकता है। वास्तु दोष उत्पन्न होने से घर में नकारात्मक ऊर्जा बढ़ने लगती है, जिसके कारण हमारे साथ दु:ख और अशुभ घटनाएं घटित होने लगती हैं। वास्तुशास्त्र में कुछ सरल उपाय बताए गए हैं, जिनको अपनाकर आप सुख-शांति को आकर्षित कर सकते हैं।

1. दक्षिण-पूर्व (अग्नि तत्व)के वास्तु दिशा क्षेत्र में लाल घोड़ों का जोड़ा और उत्तर दिशा क्षेत्र में हरे पौधे रखने से भी अधिक धन आगमन की संभावना बनती है।

2. घर की उत्तर-पूर्व दिशा में स्टोर रूम बनाने या वहां फालतू चीजें रखने से भी वहां रहने वाले लोगों को गहरे अवसाद का सामना करना पड़ सकता है। सबसे सही समाधान यह है कि उन सामानों को संबंधित दिशा क्षेत्रों में रखना चाहिए।

3. अपने घर के मन्दिर में घी का एक दीपक नियमित जलाएं तथा घंटी भी बजाना चाहिए जिससे सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा घर से बहार निकलती है। इसी तरह घर में शंख रखने और बजाने से घर का वास्तु दोष दूर होता है। घर के पूजा-स्थल में देवी-देवताओं पर चढ़ाए गए पुष्प-हार दूसरे दिन हटा देने चाहिए और भगवान को नए पुष्प-हार अर्पित करने चाहिए।

4. गलत दिशा में रखी गईं धार्मिक पुस्तकें वास्तु दोष का कारण बनती हैं। वास्तु के अनुसार धार्मिक पुस्तकों और ग्रंथों को हमेशा पश्चिम की तरफ ही रखना चाहिए। किसी दूसरी दिशा में, बेड के अंदर अथवा गद्दे या तकिये के नीचे धार्मिक पुस्तकें रखना शुभ नहीं होता।

5. सुबह के समय थोड़ी देर के लिए खिड़की, दरवाजे खोल दें ताकि ताजी हवा और सूर्य का प्रकाश घर में प्रवेश कर सके। ऐसा करने से सकारात्मक ऊर्जा आपके घर में आएगी, वास्तुदोष दूर होंगे।

(संपर्क सूत्र- 7838738389)

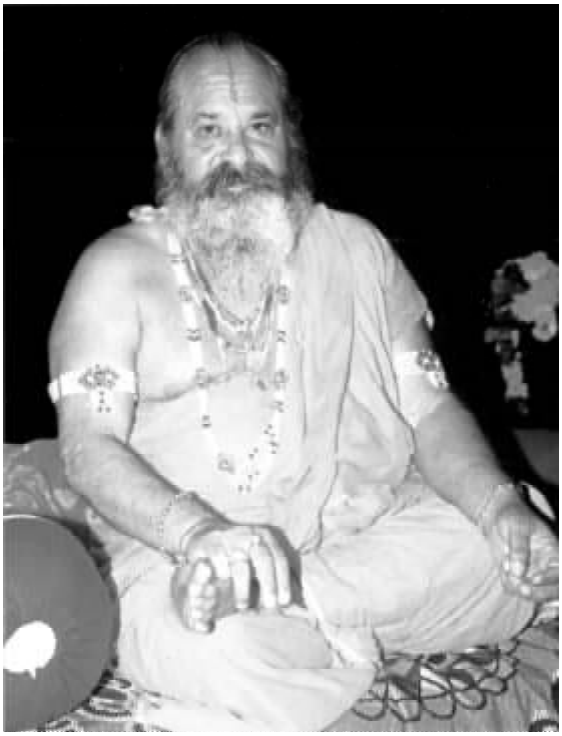

सुखद अनुभवों की लंबी श्रृंखला हैं श्री गुरू महाराज

– **अशोक चौहान**, नोएडा

गुरुजी महाराज के सम्पर्क में आने से पूर्व मैं एक बेरोजगार, बेहद गुस्सैल और बात बेबात पर मार–पीट पर उतारू हो जाने वाला युवक था। गुरुजी के संपर्क में आने मात्र से कई आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए। पहले नौकरी फिर अपना व्यवसाय, क्रोध के स्थान पर धैर्य एवं एक गम्भीर व्यक्तित्व प्राप्त हुआ।

इस परिवर्तन को कुछ लोग किस्मत का खेल मान सकते हैं तो कुछ समय पर भाग्योदय कह कर मेरी भावनाओं को नकार सकते हैं। इसलिए मैं अपने जीवन के उन अनुभवों को आपके साथ बांट रहा हूं जहां भाग्य या समय का नहीं एक सिद्ध सामर्थ्यवान युग पुरुष या कहूं भगवान की कृपा स्पष्ट परिलक्षित होती है।

एक शाम चाचा–चाची घर पर नहीं थे। बल्ब के ऊपर मच्छर मारने की टिकिया लगाकर छोड़ गये। न जाने कैसे टिकिया नीचे कपड़ों पर गिरी और कपड़ों ने आग पकड़ ली। फिर तो रस्सी पर पड़ा एक–एक कपड़ा जल उठा। रस्सी के ठीक नीचे चारपाई पर बिस्तर लगा हुआ था। उसी दीवार पर एक थैला टंगा था। रस्सी पर पड़ा प्रत्येक कपड़ा जलता रहा परन्तु वह नाइलोन की रस्सी नहीं जली। यदि रस्सी जलकर टूटती तो नीचे पड़े गैस के सिलेन्डर पर गिरती और सिलेन्डर फट कर सारे घर में आग फैल जाती। उस थैले के निकट बहुत से कपड़े जले परन्तु वह थैला नहीं जला। आग जैसे लगी थी वैसे ही खुद–ब–खुद बुझ गई। कुछ देर बाद चाचा–चाची लौटे तो यह दृश्य

देखकर दंग से रह गये। यदि प्लास्टिक की वह रस्सी जल कर टूटती तो आग बिस्तर और चारपाई को अपनी लपेट में ले लेती जिससे घर का कुछ भी सामान बचना असंभव था क्योंकि निकट ही मिट्टी का तेल तथा डीजल से भरी दो कैन भी रखी थीं। सबसे बड़ी बात यह है कि उस थैले में मेरे चाचा की पूरे जीवन की कमाई थी। जमीन–मकान के कागजात, फिक्स्ड डिपोजिट की रसीदें, डाक घर तथा बैंक के खातों के कागजात तथा सरकार से मिलने वाले मुआवजे के कागजात। देखने वाला हर व्यक्ति आश्चर्यचकित था कि सूती कपड़े जल गये मगर नाइलोन की रस्सी को जलने से किसने रोका? यह रहस्य केवल मैं ही समझ सकता था। गांव के लोग तो उस घटना को याद कर आज भी दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं।

एक और घटना मेरे अपने ही घर की है। किसान परिवार होने के कारण डीजल की आवश्यकता हर दम रहती ही है। हमारे यहां भी एक–दो कैन डीजल हमेशा रहता है। एक बार खाना इत्यादि खाकर हम लोग सोने चले गये। घर में मेहमान आये हुए थे। एक छोटा बच्चा भी था। वह चारपाई पर अकेला सोया हुआ था। निकट ही दूसरी चारपाई पर उसकी मां सोई थी। चूल्हे के निकट रखी कैन तक आग की चिंगारी पहुंची और उसमें छेद हो गया तथा डीजल के रूप में आग की नदी बह चली। बच्चे की चारपाई के ठीक नीचे से यह ऊंची लपटों वाली अग्नि रेखा तेजी से बहती हुई दूसरी चारपाई के निकट से निकल रही थी। कुछ गर्मी महसूस कर बच्चे की मां की आंख खुली तो बच्चे

मेरी आस्था तो गुरू महाराज के चरणों में ही है

को आग में घिरा देख उसके मुंह से चीख निकल पड़ी। हम सभी लोग जाग गये। भागकर बच्चे को आग से निकाला तो देखा बच्चा पूर्ववत सोया हुआ था। उसके कपड़ों को स्पर्श करने पर भी किसी प्रकार की गर्माहट का अनुभव नहीं हो रहा था। वह पूर्णतया शीतल था। बान की बनी चारपाई ने भी आग नहीं पकड़ी जबकि जूट के बान कितनी जल्दी आग पकड़ लेते हैं। सभी जानते हैं कि आग की धारा बिना कोई नुकसान पहुंचाये शीतल जल धारा के समान बाहरी नाली तक पहुंची और शांत हो गई। यह चमत्कार नहीं तो और क्या था?

एक घटना और बताता हूं। मैंने नई कार खरीदी थी। उसे लेकर आश्रम आया। गुरु जी का आशीर्वाद लिया। वापस घर जा रहा था। रात हो चली थी। मुख्य सड़क द्वारा जाने से गांव दूर पड़ता। अतः एक कच्ची ढलान से शार्टकट लिया। नीचे सीधे रास्ते पर पहुंचने से पहले ही कार के पिछले हिस्से में तेज आवाज आयी। गाड़ी रोककर नीचे उतरा तो यह देखकर दंग रह गया कि जहां से मैंने कार निकाली थी वहां 5 फुट गहरी और लगभग 3 फुट चौड़ी एक खाई खुदी हुई थी। सामान्य परिस्थितियों में कार वहां से नहीं निकल सकती थी। परन्तु न जाने किस दिव्य शक्ति ने कार को बिना खाई में गिरे हुए पार उतार दिया था। मेरी आस्था तो गुरु महाराज के चरणों में ही है।

कर्णवेध संस्कार

श्री सुदर्शन संदेश

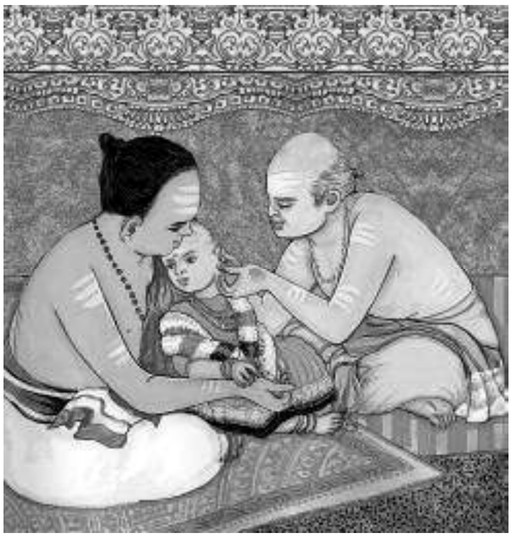

हिंदू धर्म में 16 संस्कारों का विशेष महत्व है। इस कड़ी में नौवां संस्कार है कर्णवेध संस्कार। यह इसलिए किया जाता है, ताकि बच्चे की सुनने की क्षमता का विकास हो सके और वह स्वस्थ भी रहे। कर्णवेध संस्कार के तहत कान में जो आभूषण धारण कराए जाते हैं, उससे बच्चे की सुदंरता भी बढ़ती है। इसके तहत लड़के के दाएं और लड़की के बाएं कान को पहले छेदने की परंपरा है।

इस संस्कार को करने से बच्चे का हार्निया जैसी गंभीर बीमारी से तो बचाव होता ही है, साथ ही उसके लकवा की चपेट में आने की भी आशंका खत्म हो जाती है।

बताया जाता है कि प्राचीन समय में जो हिंदू कर्णवेध संस्कार नहीं करवाते थे, उन्हें श्राद्ध करने का अधिकार नहीं मिलता था।

इस संस्कार को करने के कई वक्त बताए गये हैं। एक तो इसे बच्चे के जन्म के बारहवें या सोलहवें दिन किया जाता है। इसे बच्चे के जन्म के छठे, सातवें या आठवें महीने में भी किया जा सकता है। वैसे यह भी माना जाता है कि यदि इस संस्कार को बच्चे के जन्म के एक साल तक नहीं किया जाता है, तो इसे फिर विषम वर्ष यानी कि तीसरे, पांचवें या सातवें वर्ष में करना चाहिए। वैसे, कार्तिक, पौष, फाल्गुन और चैत्र माह इस संस्कार के लिए उचित माने जाते हैं। दिन की बात करें तो सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार इसके लिए उपयुक्त माने जाते हैं।

किसी भी पवित्र स्थान पर यह संस्कार किया जा सकता है। इसमें देवी-देवताओं को पहले पूजन किया जाता है। माना जाता है कि इस दौरान सोने का कुंडल या आभूषण पहनना अधिक उचित होता है, क्योंकि इससे दिमाग के दोनों हिस्से विद्युत के प्रभाव से बेहद मजबूत बन जाते हैं। जो लड़कियां अपने कानों में सोने के आभूषण पहनती हैं, उन्हें मासिक धर्म से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होती है। यही नहीं, इससे हिस्टीरिया नामक बीमारी में भी बड़ा लाभ मिलता है।

जीवन सिखाने कृष्ण रूप में आए

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (19 अगस्त 22) के अवसर पर विशेष

भगवान श्रीकृष्ण का परमशत्रु कंस पूर्वजन्म में हिरण्यकश्यप था। भागवत पुराण के अनुसार भगवान विष्णु के द्वारपाल जय और विजय शाप के कारण बार-बार असुर रूप में जन्म ले रहे थे। भगवान विष्णु ने इन्हें शाप से मुक्ति के लिए वरदान दिया था कि जब भी तुम जन्म लोगे, तुम्हारी मृत्यु मेरे हाथों होगी और तुम्हारा उद्धार होगा। कंस ने धरती पर जन्म लेकर धरती पर हाहाकार मचा रखा था। इसके अत्याचारपूर्ण शासन से साधु-संत कष्ट पा रहे थे। दूसरी ओर शिशुपाल जो पूर्वजन्म में हिरण्याक्ष था वह भी धरती पर आ चुका था। इन दोनों को मुक्ति प्रदान करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अवतार लिया।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में एक कथा है कि एक बार देवी राधा श्रीकृष्ण से रूठकर गोलोक से कहीं चली गईं। अवसर का लाभ उठाकर राधा की सखी विरजा श्रीकृष्ण के समीप आ गईं। इसी बीच राधा का गोलोक में आगमन हुआ और उन्होंने विरजा को श्रीकृष्ण के समीप देखकर दोनों को भला बुरा कहने लगीं। विरजा वहां से तुरंत नदी रूप धारण करके चली गईं। श्रीकृष्ण पर नाराज होते हुए देवी राधा को देखकर सुदामा नाम के गोप से सहन नहीं हुआ और उन्होंने देवी राधा के क्रोध को शांत करने के लिए उन्हें समझाने का प्रयास किया। लेकिन इससे देवी राधा शांत होने की बजाय और उग्र हो गईं। देवी राधा ने सुदामा को शाप दे दिया कि वह असुर बनकर धरती पर चले जाएं। सुदामा भी क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख पाए और देवी राधा को शाप दे दिया कि आप भी गोलोक से पृथ्वी पर चली जाएं और कुछ

श्रीकृष्ण पर नाराज होते हुए देवी राधा को देखकर सुदामा नाम के गोप से सहन नहीं हुआ और उन्होंने देवी राधा के क्रोध को शांत करने के लिए उन्हें समझाने का प्रयास किया। लेकिन इससे देवी राधा शांत होने की बजाय और उग्र हो गईं।

समय तक आपको भी श्रीकृष्ण से विरह का दुख भोगना पड़े। श्रीकृष्ण ने देवी राधा को समझाया कि चिंता ना करें यह पूर्व निर्धारित है कि आपको पृथ्वी पर अवतार लेना है, आपके साथ मैं भी पृथ्वी पर अवतार ग्रहण करूंगा जिससे सुदामा का शाप भी फलेगा और हमारा साथ भी बना रहेगा।

भागवत एवं शिव पुराण में एक कथा है कि नारद मुनि के मन में एक बार विवाह करने की इच्छा उत्पन्न हुई। मोह में फंसे नारद मुनि भगवान विष्णु के पास हरि के समान रूप मांगने पहुंच गए। भगवान विष्णु ने ही नारद के अहंकार को तोड़ने के लिए सारी लीला रची थी इसलिए उन्होंने तथास्तु कह दिया। नारद मुनि विवाह की इच्छा से स्वयंवर में पहुंचे लेकिन कन्या ने उनकी ओर देखा तक नहीं। निराश होकर नारद मुनि लौट रहे थे तो उन्होंने जल में अपना प्रतिबिंब देखा। नारद मुनि का चेहरा बंदर के समान था। भगवान विष्णु पर क्रोधित होकर नारद मुनि बैकुंठ पहुंचे। नारद मुनि ने भगवान विष्णु से कहा कि आपने मुझे बंदर का रूप दिया है जिसकी वजह से मेरा विवाह नहीं हो पाया। मैं जिस विरह वेदना को महसूस कर रहा हूं आप भी उस वेदना को महसूस करेंगे। नारद मुनि ने विष्णु भगवान को शाप दे दिया कि आपको धरती पर अवतार लेना होगा और देवी लक्ष्मी से विरह का कष्ट भोगना होगा। नारद मुनि के इसी शाप के कारण भगवान विष्णु को रामावतार में देवी सीता का वियोग और कृष्णावतार में देवी राधा का वियोग सहना पड़ा।

ईश्वरीय विधान है कि सभी युग के अंत में भगवान का अवतार होता और वह धर्म की स्थापना करते हैं। इसके बाद चल रहा युग समाप्त होता है और नया युग आरंभ होता है। द्वापर में धरती महान योद्धाओं की शक्ति से दहल रही थी। जनसंख्या का भार भी काफी हो गया था। अगर उस युग के योद्धाओं का अंत नहीं होता तो धरती पर शक्ति का असंतुलन हो जाता। शक्ति के संतुलन और नए युग के आरंभ के लिए श्रीकृष्ण ने अवतार धारण किया। महाभारत का महायुद्ध शक्ति के संतुलन और धर्म की स्थापना के लिए किया गया था जिसकी पटकथा स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने लिखी थी। महायुद्ध से ही कलियुग के आगमन की आहट शुरू हो गई।

श्री रामानुज संप्रदाय– आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

गत अंक से जारी

नारायण अपने सेवक की अनुपस्थिति का कारण समझकर स्वयं ही छद्मवेश में उनके पास पहुंचकर अपना स्वर्णपात्र देते हुए बोले, रो क्यों रहे हो? इसे लेकर अपनी अभिलाषा पूर्ण करो। जब ब्राह्मण ने अतीव हर्ष के साथ द्रुत वेग से वारंगना के घर में प्रवेश किया, तो वहां उसके स्थान पर श्री लक्ष्मी मृतप्राय हो गए और बोले, हे दयानिधे आज आपने मेरा नरक से उद्धार किया है, आपकी कृपा का अन्त नहीं। इतना कहकर वे प्रेमाश्रु विसर्जित करने लगे। उसी दिन से वह हरिप्रेम में पूर्णतः उन्मत्त हो गए। उनके अन्तर में यथार्थ ज्ञान का उदय हुआ। इस घटना के बाद किसी भी युवती का कटाक्ष उन्हें मोहित नहीं कर सका।

अध्याय 5

पोयगै, भूतत्त तथा पेय आलवार का मिलन

पोयगै, भूतत्त तथा पेय आलवारों के विषय में एक सुन्दर कथा सुनने में आती है। एक दिन आकाश बादलों से आच्छन्न था और बिजली की कड़क तथा ओलों के साथ घनघोर वर्षा होने लगी। वायुदेवता ने क्रोधमयी मूर्ति धारणकर आंधी की सहायता से प्रकृतिदेवी को और भयंकर बना दिया। दो दिन तक इसी प्रकार निरन्तर आंधी पानी का राज्य चलता रहा। रास्ते सूने पड़े थे। अत्यन्त निर्धन तथ गृहहीन लोग भी पर्वतीय गुफाओं तथा वृक्षों की कोटरों में आश्रय लेकर प्रचण्ड वायु तथा बृहदाकार शिलावृष्टि के निर्दय प्रहार से बचने का प्रयास कर रहे थे।

उसी समय वृक्षलताहीन एक सुविस्तीर्ण मैदान में एक ठण्ड से कांपता, जीर्ण वस्त्र पहने, उन्मत्त-जैसा पथिक स्वभाव से ही परछिद्रान्वेषी एवं निष्ठुर वायु के हाथों का खिलौना-सा बन गया था। मानो उसकी फटी-पुरानी चादर पर ही वायु का सारा आक्रोश निकल रहा था। **अगले अंक में जारी...**

भाष्यकारस्वामीजी के गुरू

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

...गत अंक से जारी

आपके समान प्राज्ञ के मुखरविन्द से ऐसा दुरर्थ सुनने की आशा मुझे कभी न थी।

यादव ने कहा, वत्स तुम्हारी दाम्भिकता से मेरे हृदय को असीम पीड़ा हुई है। ठीक है, क्या तुम इससे उत्तम व्याख्या कर सकोगे? रामानुज बोले, आपके आशिर्वाद से सब कुछ सम्भव हो सकता है। किंचित् घृणासूचक हास्य के साथ गुरु ने कहा, अच्छी बात है, तुम अपना नया अर्थ बताओ, थोड़ा हम भी सुनें। लगता है कि तुम शंकराचार्य के भी ऊपर उठ जाना चाहते हो। रामानुज अति विनयपूर्वक फिर कहने लगे, प्रभो, आपके आशीर्वाद से सम्भव है। कप्यासम् शब्द से यदि बन्दर के अधोभाग का अर्थ न लगाकर कं जलं पिबतीति कपिः सूर्य और अस् धातु पूरे कप्यासम् शब्द का अर्थ सूर्य द्वारा प्रस्फुटित निकलता है। अतः उक्त मंत्रांश का अर्थ इस प्रकार होगा, उन स्वर्णिम सवितृमण्डल-मध्यवर्ती पुरुष के दोनों नेत्र सूर्य द्वारा प्रस्फुटित पद्म के समान सुन्दर हैं।

ऐसा अर्थ सुन यादव ने कहा, यह मुख्यार्थ नहीं, गौणार्थ मात्र है। अस्तु इसमें तुम्हारा विशेष व्याख्या-कौशल है।

इस घटना के बाद शिक्षक ने रामानुज को एक महा द्वैतवादी भगवद्भक्त मान लिया और उनके प्रति उनके लगाव में भी किंचित न्यूनता आ गई।

एक अन्य दिन तैत्तिरीय उपनिषद् के सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म - मंत्र का अर्थ बताते समय यादवप्रकाश ने ब्रह्म को सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप तथा आनन्दस्वरूप कहकर व्याख्या की, तो श्री रामानुज इसका प्रतिवाद करते हुए बोले, ब्रह्म सत्यधर्म विशिष्ट हैं, असत्य-धर्मविशिष्ट नहीं, ज्ञान ही उनका धर्म है अज्ञान नहीं और वे अनन्त हैं सान्त नहीं। वे सत्य, ज्ञान और अनन्त गुणों के गुणी हैं। इन्हें उनका स्वरूप कहना किसी प्रकार युक्तिसंगत नहीं है, वैसे ही जैसे कि देह मेरा है, मैं देह नहीं हूं। यह व्याख्या सुनकर अध्यापक रोषपूर्वक बोले, रे धृष्ट बालक, यदि तू मेरी व्याख्या नहीं सुनना चाहता, तो फिर यहां आता ही क्यों है? अपने घर नई पाठशाला क्यों नहीं खोल लेता?

अगले अंक में जारी

श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव '22 की झलकियां

श्री सिद्धदाता आश्रम में श्री गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 1-2 वैकुण्ठवासी बाबा की प्रतिमा एवं समाधि पर पूजन, 3- अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने श्री गुरु महाराज का चरण वंदन, 4-महंत बालाचार्य ने नोएडा में मंदिर बनाकर श्री गुरु महाराज को भेंट किया, 5-पूर्व आईएएस अशोक शर्मा ने माथा टेका 6-उपस्थित भक्तजन 7- परम पूज्य श्री गुरु महाराज जी की आरती, 8-भक्तों को प्रवचन देते श्री गुरु महाराज जी, 9-पुस्तक पुण्य कर्म का विमोचन, 10-भजनों पर झूमते भक्तजन, 11-भक्तों को प्रसाद प्रदान करते श्री गुरु महाराज जी, 12-छबील पर मीठा पानी का वितरण, 13-संप्रदाय का तिलक लगाते भक्त।

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/22-24
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 1st & 2nd day of every month

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित व ई–9 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक–शकुन रघुवंशी